Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 49

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

7 दिसम्बर 2017 ई. 18 रबीउल् अव्वल 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

भविष्यवाणी تخرج الصّدور اِلَی الْقُبُور **इस अर्थों का बोध ख़ुदा तआला की ओर से यह हुआ था कि पंजाब के सदर के स्थान पर आसीन मौलवी जो अपने अपने स्थान पर मुफ़्ती समझे जाते हैं जो अधीनस्थ मौलवियों के गुरू और शेख़ हैं वे इस इल्हाम के बाद कब्रों की ओर स्थानांतरित होंगे।**

अत: इस के बाद समस्त मौलवियों के धर्माचार्य मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी इस संसार से कूचकर गए। वही मेरे बारे में सर्वप्रथम फ़त्वा देने वाले थे।

मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी वह बुज़ुर्ग थे जिन्होंने मेरे कुफ़्र के लिए मक्का से कुफ़्र के फ़त्वे मंगाए थे। वह भी अपने एक पक्षीय मुबाहले के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हो गए।

लुधियाना के मुफ़्ती मौलवी मुहम्मद, मौलवी अब्दुल्लाह, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ जिन्होंने कई बार मुबाहले के रूप में ''ला'नतुल्लाहे अललकाज़िबीन'' कहा था। वे भी इस इल्हाम के बाद चल बसे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

97. सातानवे वां निशान - यह एक भविष्यवाणी है जो अखबार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित हो चुकी है कि -

تخرج الصّدور اِلَی الْقُبُور

इस अर्थों का बोध ख़ुदा तआला की ओर से यह हुआ था कि पंजाब के सदर के स्थान पर आसीन मौलवी जो अपने अपने स्थान पर मुफ़्ती समझे जाते हैं जो अधीनस्थ मौलवियों के गुरू और शेख़ हैं वे इस इल्हाम के बाद कब्रों की ओर स्थानांतरित होंगे। अत: इस के बाद समस्त मौलवियों के धर्माचार्य मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी इस संसार से कूचकर गए। वही मेरे बारे में सर्वप्रथम फ़त्वा देने वाले थे जिन्होंने मेरे कुफ़्र का फ़त्वा दिया था तथा मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के गुरू थे। उन्होंने मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी के फ़त्वा लेने पर ये शब्द मेरे बारे में लिखे थे कि ऐसा व्यक्ति पथभ्रष्ट, पथभ्रष्ट करने वाला तथा इस्लाम से बाहर है तथा ऐसे लोगों को मुसलमानों की क़ब्रों में दफ़्न नहीं करना चाहिए। इस मौलवी ने ये फ़त्वे देकर समस्त पंजाब में अग्नि भड़का दी थी और लोग इतने भयभीत हो गए थे कि हम से हाथ मिलाना भी अप्रिय समझते थे कि कदाचित इतने संबंध से भी हम काफ़िर हो जाएंगे। फिर मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी वह बुज़ुर्ग थे जिन्होंने मेरे कुफ़्र के लिए मक्का से कुफ़्र के फ़त्वे मंगाए थे। वह भी अपने एक पक्षीय मुबाहले के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हो गए। खेद कि मक्का वालों को उनकी इस मृत्यु की सूचना नहीं हुई ताकि अपने फ़त्वे वापस लेते। फिर लुधियाना के मुफ़्ती मौलवी मुहम्मद, मौलवी अब्दुल्लाह, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ जिन्होंने कई बार मुबाहले के रूप में ''ला'नतुल्लाहे अललकाज़िबीन'' कहा था। वे भी इस इल्हाम के पश्चात् चल बसे। फिर अमृतसर के मुफ़्ती रुसुल बाबा थे वह भी कूच कर गए। इसी प्रकार बहुत से पंजाब के मौलवी तता कुछ हिन्दुस्तान के मौलवी इस इल्हाम के पश्चात् इस संसार से चल बसे। यदि यहां इन सब की सूची का उल्लेख किया जाए तो वह भी एक पुस्तक बन जाएगी। यहाँ जितना उल्लेख किया गया है वह भविष्यवाणी की सच्चाई प्रकट करने के लिए पर्याप्त है। यदि कोई इतने पर तृप्त न हों तो हम एक लम्बी सूची दे सकते हैं।

98. अठानवे वां निशांन - कुछ वर्ष हुए हैं कि सेठ अब्दुर्रहमान साहिब व्यापारी मद्रास जो जमाअत के प्रथम श्रेणी के निष्कपट व्यक्ति हैं क़ादियान में आए थे। उनके व्यापारिक मामलों में कुछ मतभेद और संकट आ गया था। उन्होंने दुआ की याचना की तब यह इल्हाम हुआ जो निम्नलिखित है -

क़ादिर है वह बारगह टूटा काम बनावे
बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पावे।

इस इल्हामी इबारत का अर्थ यह था कि ख़ुदा तआला टूटा हुआ काम बना देगा, किन्तु कुछ समय बाद बना बनाया तोड़ देगा। अत: यह इल्हाम क़ादियान में ही सेठ साहिब को सुनाया गया तथा थोड़े दिन ही गुज़रे थे कि ख़ुदा तआला ने उनके व्यापारिक मामलों में चमक-दमक पैदा कर दी तथा परोक्ष से ऐसे साधन उत्पन्न हुए कि आर्थिक सफलताएं आरंभ हो गईं फिर कुछ समयोपरान्त वह बना बनाया काम टूट गया।

99. निनानवे वां निशान - एक बार फ़ज्र के समय इल्हाम हुआ कि आज हाजी अरबाब मुहम्मद लश्कर खान के निकटस्थ का रुपया आता है। अत: मैंने दो आर्यों शरमपत और मलावामल निवासी क़ादियान को प्रात: अर्थात् डाक आने से बहुत पहले यह भविष्यवाणी बता दी, परन्तु इन दोनों आर्यों ने धार्मिक विरोध के कारण इस बात पर आग्रह किया कि हम तब मानेंगे कि जब हम में से कोई डाकखाने जाए। संयोग से डाकख़ाने का सब पोस्ट मास्टर भी हिन्दू ही था। मैंने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और जब डाक आने का समय हुआ तो उन दोनों में से मलावामल आर्य डाक लेने के लिए गया और एक पत्र लाया जिसमें लिखा था कि सरवर खान ने... भेजे हैं। अब यह नया विवाद सामने आया कि सरवर खान कौन है, क्या वह मुहम्मद लश्कर खान का कोई निकटस्थ है या नहीं तथा आर्यों का अधिकार था कि इसका निर्णय किया जाए ताकि मूल वास्तविकता ज्ञात हो। तब मुन्शी इलाही बख्श एकाउंटेन्ट लेखक "असा-ए-मूसा" की ओर जो उस समय होती मर्दान में थे और अभी विरोधी नहीं थे पत्र लिखा गया कि यहां यह विवाद है तथा ज्ञात करने योग्य बात यह है कि सरवर खान का मुहम्मद लश्कर खान से कुछ निकट संबंध है अथवा नहीं। कुछ दिनों के पश्चात् मुन्शी इलाही बख़्श साहिब का होती मर्दान से उत्तर आया, जिसमें लिखा था कि सरवर खान अरबाब लश्कर ख़ान का बेटा है। तब दोनों आर्य निरुत्तर रह गए। अब देखिए कि यह इस प्रकार का परोक्ष-ज्ञान है कि बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि ख़ुदा के अतिरिक्त कोई इस पर सामर्थ्यवान हो सके। इस भविष्यवाणी में दोनों ओर विरोधियों की साक्ष्य है अर्थात् एक ओर तो दो आर्य हैं जिन के बारे में मेरा कहना है कि उन्हें यह भविष्यवाणी मैंने सुनाई थी तथा उनमें से एक पत्र लाने के लिए डाकखाने गया था और दूसरी ओर मुन्शी

पृष्ठ 10 पर शेष

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना के दिन निकट आ गए हैं

दिसम्बर का महीना आरम्भ होते ही क़ादियान ज़िला गुरदासपुर की ज़मीन में एक नई ख़ुशबू से महक उठती है, यह ख़ुशबू जलसा सालाना कादियान की होती है। सारे संसार के अहमदियों के मन इस जलसा में सम्मिलित होने के लिए मचल उठते हैं। क्या अफ्रीकन क्या अमरीकन और क्या यूरोप वासी प्रत्येक अहमदी का दिल कादियान की पवित्र धरती के दर्शन के लिए बेचैन हो उठता हैं। वास्तव में जलसा सालाना है ही ऐसी चीज़।

इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत का 123वां सालाना जलसा ज़िला गुरदासपुर ,पंजाब के शहर क़ादियान में 29,30,31 दिसम्बर दिनांक शुक्रवार,शनिवार तथा रविवार को आयोजित होगा। इन्शा अल्लाह तआला। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों से हज़ारों श्रृद्धालु सम्मिलित होते हैं। इस वार्षिक जलसा में अहमदी विद्वान ईश्वर की सत्ता,क़ुरआन शरीफ की शान्ति पूर्ण शिक्षा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन, देश प्रेम, विश्व शान्ति तथा इंसानी भाईचारा ,सर्वधर्म समभाव पर आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करने वाले ज्ञान वर्धक व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। जलसे के दूसरे दिन विभिन्न धर्मों के विद्वान अपने धर्मग्रन्थों से साम्प्रदायिक सद्भाव तथा धार्मिक एकता पर आधारित शिक्षा प्रस्तुत करते हैं। जलसे में विशेष रूप से अहमदिया मुस्लिम जमाआत के रूहानी ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब अय्दहुल्लाहो तआला लन्दन से सीधा सम्बोधन करते हैं।

जलसा सालाना की नींव सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शुभ हाथों से 1891 ई में रखी गई आप ने इस जलसे को आरम्भ करने का निर्णय अल्लाह तआला के आदेश और उसी की तरफ से मिलने वाले मार्गदर्शन के परिणाम में किया और उसी समय यह भी घोषणा कि की यह अल्लाह तआला की सम्पूर्ण सहायता से जारी होने वाला एक प्रबंध है जो संसार में उन्नति करता चला जाएगा और सम्पूर्ण संसार इस से लाभ प्राप्त करेगा । पहले जलसा में केवल 75 व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। कितने ही सौभाग्यशाली वे लोग थे जिनका नाम कयामत तक के लिए जमाअत अहमदिया के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिख दिया गया। जलसा सलाना प्रत्येक वर्ष उन्नति करता गया और इसका दामन लाभदायक एंव विस्तृत होता गया। भारत विभाजन के पश्चात पाकिस्तान एंव भारत में केन्द्रीय जलसे अत्यधिक महानता के साथ होते रहे और फिर संसार के दूसरे देशों मे भी इन जलसों का आरम्भ हुआ और अब तो अल्लाह ताला की कृपा से यह जलसे संसार के लगभग एक सौ देशों से अधिक देशों में प्रत्येक वर्ष बहुत महानता से आयोजित होते हैं। और इस में शामिल होने वालों की संख्या बढ़ते बढ़ते सैंकड़ों हज़ारों में पहुंच चुकी है। 2005 ई. में अहमदिया जमाअत के पांचवे ख़लीफा जब कादियान में पधारे थे तो इस जलसा में शामिल होने के लिए 52 देशों से 70000 हज़ार से अधिक लोग क़ादियान आए थे।

जलसा सलाना क्या है, कृपा एवं दया का एक बादल है जो समस्त संसार पर छा गया है और इस बादल के परिणाम स्वरुप होने वाली आध्यात्मिक वर्षा गांव गांव और शहर शहर में ख़ुदा के भक्तों को तृप्त करती चली जाती है।

अलहम्दुलिल्लाह अब इस जलसा सालाना के दिन बहुत निकट आ गए हैं। यह जलसा सांसारिक आंनदमयी मेलों की तरह नहीं, न ही कोई तमाशा है और न ही सांसारिक मेलों का रंग अपने भीतर रखता है सम्पूर्ण धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति एवं वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति करने वाले खुदा के सानिध्य तक पहुंचाने वाली राहों की खोज करने वाले इस्लाम के वास्तविक प्रेमी और प्रत्येक शहर व गांव के रहने वाले भारत एवं भारत से बाहर रहने वाले इस निश्चय के साथ इस जलसे में शामिल होते हैं कि हमें नेक एवं पवित्र आध्यात्मिक लोगों की सगंत से लाभ प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। परस्पर भाईचारा प्रेम शान्ति देखने एवं उसको फैलाने का अवसर मिलेगा। विभिन्न धर्मों के विचारों को सुनने का अवसर मिलेगा और हम आध्यात्मिक रुप से एक नया जीवन प्राप्त कर के अपने घरों में वापिस लौटने वाले होगें । यही वे महान उद्देश्य हैं जिनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जलसे में शामिल होने वालों के लिए अत्यंत पीढ़ा के साथ दुआऐं की हैं। अल्लाह करे कि इन दुआओं का लाभ हमेशा जारी रहे ।

इस जलसा के उद्देश्य को बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को यह उपदेश देते हैं कि:

"इस सिलसिले की बुनयादी ईंट ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इस के लिए क़ौमें तैयार की हैं जो शीघ्र ही इस में आ मिलेंगी क्योंकि यह उस सामर्थवान का कार्य है जिस के आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"(मज्मूआ इशतेहार भाग 1 पृ 341)

आप एक अन्य स्थान पर फर्माते हैं:

"इस जलसा का उद्देशय तथा अभिप्राय यह है कि हमारी जमाअत के लोग बार बार मुलाक़ातों से अपने अन्दर इस प्रकार का एक परिवर्तन उत्पन्न करें कि उनके दिल ख़ुदा तआला का ख़ौफ अपने अंदर पैदा करें और नेकी संयम, परहेज़गारी, नर्म दिली आपसी प्रेम और भाईचारे में दूसरों के लिए आदर्श बन जाएं"(शहादतुल क़र्आन पृ 394)

कादियान दारूल अमान में मनाए जाने वाले इस सालाना जलसा के पवित्र दिनों में नमाज़, दरस, और भाषणों में जो आध्यात्मिक प्रसन्नता मिलती है वह किसी अन्य स्थान में नहीं मिल सकती । इस आध्यात्मिक प्रसन्नता का अनुभव शब्दों में वर्णन करना कठिन है। जलसा सालाना के परिवेश का अनुमान इस बात से अच्छी तरह लगाया जा सकता है कि यह जलसा दुआओं, अल्लाह तआला की इबादत, गुनगाण और मोमीनों के प्रेम एकता भाईचारा के पवित्र वातावरण में आयोजित होता है। प्रतिदिन नमाज-ए-तहज्जुद एवं पाचं अनिवार्य नमाजों का विशेष प्रबंध किया जाता है। कादियान की चारों दिशाऐं अल्लाह के गुनगाण एवं अल्लाहु अकबर के नारों से गूंजती रहती हैं। दूर दूर क्षेत्रों एव देशों से आए हुए विभिन्न रंगों एवं जातियों के लोग एक दूसरे से परिचित होते हैं और आपस में ऐसे प्रेम एवं मुहब्बत से मिलते है जैसे दो बिछड़े हुए भाई हों । इस अवसर में जात-पात, रंग-नस्ल, और भाषाओं के अन्तर को भूलकर हर एक इस्लाम और अहमदिया की माला में जुड़ जाता है। यह दिन आध्यात्मिक भाईयों एवं बहनों के आपसी मिलन और भाईचारा एव मानवता के सम्बंध दृढ़ करने के दिन होते हैं । हालांकि कादियान के भोजन, ऋतु, रीति, प्रथा, भाषा और माहौल अलग होने के बावजूद अलग अलग राज्यों और देशों से आए हुए असंख्य अहमदी यहां इस प्रकार से प्रसन्न होते हैं कि उन के अंदर कोई अपरिचित अथवा अन्य भिन्नता बाकी नहीं रहती । अनेक वृद्ध जो अपने शहर में अपने आपको बहुत कमज़ोर जानते हैं वह क़ादियान पहुँच कर अपने आपको युवक समझने लगते हैं। अलग अलग राज्यों से आए हुए लोग जब आपस में मिलते हैं तो वे अपने अंदर एक आध्यात्मिक सांत्वना प्राप्त करते हैं । जिस का वर्णन नहीं हो सकता। सक्षेपं यह की यह तीन दिन प्रचार अध्यात्म एवं ज्ञान की उन्नति के अनमोल दिन होते हैं । इन से जमाअत के लोगों को भरपूर लाभ प्राप्त करना चाहिए ।

इस जलसा में योगदान देने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस प्रकार से दुआ करते हैं कि :

''आख़िर पर मैं दुआ करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस जलसा सालाना के लिए यात्रा करता है अल्लाह उनका सहायक हो और उन्हें बे-हिसाब बदला दे और उनके ऊपर अपनी दया (कृपा) बरसाए और उनकी घबराहटें और व्याकुल परिस्थितियों को आसान कर दे और उनके दु:ख दूर करके उन्हें मुक्ति दे और उनके प्रति मनोकामनाओं को संपूर्ण करे और क़यामत के दिन उन सब को अपने प्रिय भक्तों के साथ उठाए । जिन के ऊपर उसकी अपार कृपा अवर्तिण हुई है और अल्लाह इस यात्रा की समाप्ति तक उनका सहाय हो ।

(इश्तिहार 7 दिसम्बर 1892 ई.)

आज फिर एक साल बाद दोबारा यह जलसा बड़ी ख़ुशियों आध्यात्मिक प्रसन्नताओं का उपहार लेकर उपस्थित हो रहा है, बुला रहा है कि आईए और इस उपहार को स्वीकार कर के प्रसन्नता से झूम उठिये। अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला अपनी कृपा एवं सुरक्षा व सहायता से जलसा सालाना को असाधारण उन्नति देता चला जाऐ और इसे उन्नति का एक ताज़ा चिन्ह बना दे। अल्लाह करे सम्पूर्ण मानवजाति के लिए यह जलसा सालाना आपसी धार्मिक सांसारिक मतभेद समाप्त करने वाला हो आमीन ।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज अल्लाह तआला के फज़्ल से सब से अधिक एहसास आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मानने वालों को ही है और इसकी सबसे व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी अल्लाह तआला की कृपा से अहमदी ही करते हैं। आज दुनिया तो माल दौलत समेटने में लगी हुई है अहमदियों की एक बहुत बड़ी संख्या है, जो पैसा कमाते हैं, दौलत कमाते हैं जब उन्हें वित्तीय कुरबानी की तरफ ध्यान दिलाया जाता है तो वह अपना माल प्रस्तुत करते हैं और यह उस निरंतर प्रशिक्षण का परिणाम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारी फरमाई है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माली कुरबानी के बारे में कुछ नसीहतें।

जब इंसान अपनी सब से प्यारी चीज़ को अल्लाह तआला की राह में खर्च करता है तो अल्लाह तआला ने यह भी फरमाया है कि मैं इस को बढ़ा कर देता हूं और सात सौ गुना तक भी दे सकता हूँ और अधिक भी दे सकता हूँ तो जब अहमदी यह कुरबानी करते हैं तो उन्हें यह भी विश्वास होता है कि अल्लाह तआला बढ़ा कर देगा और हमारे से यह व्यवहार करेगा ।

दुनिया के विभिन्न देशों में पुराने अहमिदयों और नए अहमिदयों को माली कुरबानी के नतीजे में अल्लाह तआला के व्यवहार और उन के मालों में बरकत की ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

अल्लाह तआला के फज़्ल से जमाअत के आरम्भ से ले कर आज तक मुख़लेसीन पुराने अहमदी भी, नए आने वाले भी अल्लाह तआला के व्यवहार और वादों के तजुर्बा रखते हैं।

अहमदियों की बहुमत इस बात का एहसास रखती है कि यह समय जो इस्लाम के प्रकाशन की सम्पूर्णता का ज़माना है जिसके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है जो कि विभिन्न भाषाओं में कुरआन के प्रकाशन और अनुवाद के माध्यम से हो रहा है । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों के प्रकाशन और जमाअत के लिट्रेचर के माध्यम से हो रहा है। मस्जिदों के निर्माण के माध्यम से हो रहा है। मिशन घरों की स्थापना के माध्यम से हो रहा है, जामिया की स्थापना के द्वारा किया जा रहा है। अफ्रीका में भी, एशिया में भी, उत्तरी अमेरिका में भी, इंडोनेशिया में भी, यूरोप में भी स्थापित किया गया है। जहां से मुरब्बियान और मुबल्लिग़ पास हो कर इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं जब यह सारी बातें अहमदियों के ज्ञान में आती हैं उन्हें पता लगता है कि इसके लिए वित्तीय क़ुरबानी की भी ज़रूरत है और फिर वह वित्तीय कुरबानी करते हैं उसी तरह जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद ने भी फरमाया कि सृष्टि से सहानुभूति ईमान का अंग है इस सहानुभूति के अधीन अस्पतालों , स्कूलों की स्थापना और इस के अतिरिक्त भी जमाअत में राहत प्रणाली की स्थापना हैं। यह सभी कुछ मुख़लेसीन की कुरबानियों के माध्यम से हो रहा है

तहरीक जदीद के चौरासीवें (84) साल के आरम्भ का एलान, पिछले साल तहरीक जदीद के माली निज़ाम में जमाअत को एक करोड़ पच्चीस लाख अस्सी हज़ार पाऊंड माली कुरबानी करने की तौफीक मिली। पाकिस्तान के अतिरिक्त सारी दुनिया में जमाअत जर्मनी नम्बर एक पर , बर्तानिया नम्बर दो और अमरीका नम्बर तीन पर है।

तहरीक जदीद में शामिल होने वालों की संख्या में वृद्धि की बहुत गुंजायश अभी बाकी है। जमाअत के लोगों और प्रशासन को इस ओर विशेश ध्यान देने की आवश्यकता है।

कुछ समय पहले मस्जिद बैयतुल फुतूह के कमपलेक्स में आग लगने से इमारत को जो नुकसान हुआ इस को नया बनाना के लिए यू.के की जमाअत के लोग और दुनिया भर के बहुत अधिक देने वाले आदमियों को माली कुरबानी की तहरीक।

तीन साल के समय में अपनी रकम के जो भी वादे करें उन को पूरा करने की कोशिश करें। परन्तु कम से कम तीसरा हिस्सा पहले साल में ही ज़रूर अदा करें।

आदरणीय आदिल हुमूज़ हूज़ह साहिब यमन की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 नवम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ

(आले इम्रान:93)इस आयत का अनुवाद है कि तुम हरिगज़ नेकी को नहीं पा सकोगे यहां तक कि तुम उन चीज़ों में से खर्च करो जिन से तुम मुहब्बत करो और जो कुछ तुम खर्च करते हो निसन्देह अल्लाह तआला इस को ख़ूब जानता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने जो विषय वर्णन किया है जिस को हमेशा अल्लाह तआला की राह में कुरबानी करने वाले मोमिनों ने बेहतर रंग में समझा है। इसकी सबसे बढ़कर अभिव्यक्ति तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने किया जिन्होंने अपना माल , अपना जीवन, और अपनी समय धर्म के लिए कुरबान किया। ये वे लोग थे जिन्होंने अल्बिर्रे की वास्तविकता को समझा यानी नेकी की इस गुणवत्ता को समझा और प्राप्त करने की कोशिश की जो नेकियों की उच्चतम गुणवत्ता थी जो तक्वा की उच्च गुणवत्ता थी जो नैतिकता की उच्च गुणवत्ता थी जो वित्तीय कुरबानी करने की उच्च गुणवत्ता थी ख़ुदा की ख़ुशी की उच्चतम गुणवत्ता थी। अत: एक रिवायत में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत अबू तलहा ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल मेरे पास एक बाग़ है जो बैरह: के नाम से जाना जाता है और मस्जिदे नबवी

के निकट वह बाग़ था । उन्होंने कहा कि मुझे अपनी जायदादों में सब से प्यारा यही बाग़ है। आज में इसे अल्लाह तआला की राह में सदका करता हूं।

(सहीह अल्बुख़ारी किताब अत्तफसीर अल्कुरआन हदीस 4554)

तो यह गुणवत्ता थी सहाबा की और आज अल्लाह तआला के फज़्ल से सब से अधिक एहसास आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे ग़ुलाम को मानने वालों को ही है और इसकी सबसे व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी अल्लाह तआला की कृपा से अहमदी ही करते हैं। आज दुनिया तो माल दौलत समेटने में लगी हुई है अहमदियों की एक बहुत बड़ी संख्या है, जो पैसा कमाते हैं, दौलत कमाते हैं जब उन्हें वित्तीय कुरबानी की तरफ ध्यान दिलाया जाता है तो वह अपना माल प्रस्तुत करते हैं और यह उस निरंतर प्रशिक्षण का परिणाम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारी फरमाई है। विभिन्न अवसरों पर, विभिन्न स्थानों में विभिन्न उपदेशों के साथ आप ने हमें कुरबानियों की नसीहत फरमाई। अत: एक अवसर पर आर्थिक कुरबानी के बारे में आप वर्णन फरमाते हैं कि

दुनिया में इंसान माल से बहुत प्यार करता है इसी लिए ताबीरुर्रुअया में लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति देखे(सपने में देखे) कि उसने जिगर निकालकर किसी को दिया है तो इसका मतलब माल है। यही कारण है कि वास्तविक तक्वा और ईमान की प्राप्ति के लिए फरमाया और विश्वास के अधिग्रहण का कारण है। لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ कि वास्तविक नेकी को हरगिज़ न पाओगे जब तक तुम प्रिय चीज़ न खर्च करो क्योंकि अल्लाह तआला की सृष्टि के साथ सहानुभूति और अच्छा व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा माल के खर्च की ज़रूरत को बतलाया है। (अल्लाह तआला के बन्दों के हक अदा करने के बारे में फरमाया कि बन्दों के हक अदा करने के लिए इस का बहुत बड़ा हिस्सा, इस की ज़रूरत माल की ज़रूरत है।) फरमाते हैं कि और अपनी जाति तथा अल्लाह की सृष्टि की सहानुभूति एक एसी चीज़ है जो ईमान का दूसरा भाग है जिस के बिना ईमान सम्पूर्ण और दृढ़ नहीं होता।(अल्लाह तआला के बन्दों का हक अदा करना ईमान का एक हिस्सा है। इस के बिना ईमान सम्पूर्ण नहीं होता। दृढ़ नहीं होता। पक्का नहीं होता।) फरमाया कि जब तक इंसान कुरबानी न करे दूसरों को लाभ कैसे पहुंचा सकता है।(दूसरों को लाभ पहुंचाने और सहानुभूति के लिए कुरबानी ज़रूरी है) और इस आयत में لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ इस आयत में इसी कुरबानी की शिक्षा दी गई है। अत: माल का अल्लाह तआला की राह में खर्च करना भी इंसान का सौभाग्य और तक्वा की कसौटी है।(अर्थात वह कसौटी जिस से तक्वा परखा जाता है) फरमाया कि अबूबकर रज़ि अल्लाह की ज़िन्दगी में अल्लाह तआला के लिए वक्फ का स्तर और कसौटी वह था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (धर्म के लिए) एक ज़रूरत वर्णन की और घर का सारा सामान ले कर हाज़िर हो गऐ।

(मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 95-96 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: यह वह उच्चतम गुणवत्ता है जो हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने स्थापित की और आप के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने स्थापित फरमाई। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबकर घर का कुल सामान लेकर आए। हज़रत उमर घर का आधा सामान लेकर आ गए और इसी तरह बाकी सहाबा भी अपनी अपनी ताकत के अनुसरा कुरबानियां करते रहे।

(उद्धिरत मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 95 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

और यही वह गुणवत्ता का स्तर है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उदाहरण दे कर हम में पैदा करना चाहा है और जैसा कि मैं ने कहा कि बहुत से अहमदी है जो कुरबानियों के उच्च स्तर पैदा करने की कोशिश करते हैं और जब वह कुरआन और हदीस में और इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश पढ़ते हैं इस बात पर उन्हें विश्वास भी होता है कि अल्लाह तआला ने जब अपने रास्ते में खर्च करने वालों के मालों और नफ़ूस में बरकत को भी फरमाया है जब इंसान अपनी सब से प्यारी चीज़ को अल्लाह तआला की राह में खर्च करता है तो अल्लाह तआला ने यह भी फरमाया है कि मैं इस को बढ़ा कर देता हूं और सात सौ गुना तक भी दे सकता हूँ और अधिक भी दे सकता हूँ तो जब अहमदी यह कुरबानी करते हैं जब अहमदी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस इरशाद के अनुसार खर्च करते हैं तो उन्हें यह भी विश्वास होता है कि अल्लाह तआला बढ़ा कर देगा और हमारे से यह व्यवहार करेगा . जिस में आप ने यह फरमाया कि जिस ने एक खजूर भी पाक कमाई में से अल्लाह तआला की राह में दी और अल्लाह तआला पाक चीज़ को ही स्वीकार करता है यह बहुत ज़रूरी चीज़ याद रखने वाली है। धोखे से कमाई हुई कमाई अल्लाह तआला स्वीकार नहीं करता। अल्लाह तआला पाक कमाई स्वीकार करता है और फरमाया कि जिस ने पाक कमाई अल्लाह तआला की राह में दी तो अल्लाह तआाल उस खजूर को दाएं हाथ से स्वीकार करेगा।(चाहे वह खजूर के बराबर कमाई हो।) और उसे बढ़ाते जाएगा यहां तक कि वह पहाड़ों जितनी हो जाएगी। फरमाया कि जैसे तुम में से कोई अपने छोटे बछड़े की परविरश करता है और उसे बड़ा जानवर बना देता है।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल ज़कात 1410)

अब यह इस ज़माने में जब हम यह पढ़ते हैं ये बातें सुनते हैं, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश सुनते हैं तो यह कोई पुराने किस्से कहानियाँ नहीं हैं बल्कि आज भी कुरबानी करने वालों को निजी अनुभव होते हैं और फिर वे जो कुरबानियां करते हैं तो यह बात उन के संसाधनों को भी बढ़ाती है और उन के ईमान को भी बढ़ाता है, इसलिए मैं कुछ घटनाएं वर्णन करता हूं।

कैमरून अफ्रीका का एक देश है वहाँ के मुबल्लिग़ इन्चार्ज कहते हैं कि वहां के एक मुअल्लिम हैं अबू साहिब उन्होंने बताया कि एक अहमदी ने जो पिछले साल बेरोज़गार थे। अब्दुल्लाह उनका नाम है और इतने बुरे हालात थे कि अपने परिवार को संभालना भी उनके लिए मुश्किल था। इस हालत में वह अक दिन जुम्अ: की नमाज़ पर आए। नमाज़ जुम्अ: के बाद जब सचिव साहिब ने तहरीक जदीद के लिए घोषणा की तो अब्दुल्ला साहिब के पास जेब में दस हजार सीफह फ्रैंक थे उन्होंने घोषणा सुनते ही सारी राशि तहरीक जदीद के लिए दे दी कुछ दिनों के बाद, वह केंद्र में आए और कहा, अल्लाह तआला ने मेरा चन्दा स्वीकार कर लिया है और एक सप्ताह के अन्दर एक निजी कंपनी ने मुझे काम दिया है और मेरा वेतन एक लाख फ्रैंक सीफह निर्धारित हुआ है जो मेरे चंदे से दस गुना अधिक है। मुझे हर महीने मिलेगा। यह अल्लाह तआला का विशेष इनाम है। कहते हैं अब मैं जमाअत को पहला वेतन देता हूं। अब यह ग़रीब लोग हैं इन को अल्लाह तआला किस प्रकार इन अनुभवों से गुज़ारता है किस प्रकार से बरकतों से नवाज़ता है। अक और उदाहरण भी है।

कांगो ब्राज़ील के एक नए अहमदी दाऊद साहिब हैं। यह भी अफ्रीका का देश है। उनके तंग वित्तीय स्थिति के मद्देनजर उन्हें कहा गया कि न्यूनतम हर शुक्रवार अहमदिया मस्जिद में अदा करने आया करें। जब वह शुक्रवार को नियमित हुए तो एक दिन शुक्रवार के बाद उन्हें अलग बैठक में वित्तीय कुरबानी के महत्व का उन्हें बताया और कहा कि जो कुछ भी ख़ुदा तआला आप को दे इसमें ज़रूर कुछ न कुछ उस के रास्ते में दें। जो कुछ आप अल्लाह तआला के रास्ता देंगे वह आपको उस से अधिक दे देगा। अल्लाह तआला का वादा है कि शुद्ध कमाई से अगर दोगे। अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करोगे। मैं तुम्हें लौटाऊंगा। इन को यह कहा गया कि इस तरह तुम्हारी कमज़ोर वित्तीय स्थिति अच्छी हालत में बदल जाएंगी। यह कह कर मुबल्लिग़ साहिब कहते हैं कि मैंने उन्हें वापसी का किराया भी दिया और रवाना कर दिया। एक सप्ताह के बाद शुक्रवार के लिए आए तो शुक्रवार के बाद बहुत खुश नजर आ रहे थे वजह पूछी तो कहने लगे कि आपने पिछले शुक्रवार को जो चन्दों की तहरीक की थी अत: मस्जिद से जाने से पहले मैंने सौ फ्रैंक सीफह चंदे की मद में अदा किए थे चंदा देने के बाद जैसे ही घर पहुंचा तो एक पड़ोसी दोस्त जिन्होंने कुछ महीनों से थोड़ी सी जलाने वाली लकड़ी हमारे आंगन में रखी हुई थी अचानक वह लकड़ी लेने के लिए आ गए और जाते हुए चार हज़ार फ्रैंक सीफह मेरे हाथ पर थमा गए। मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि अभी तो मैं चन्दा दे कर घर पहुंचा था और ख़ुदा तआला ने मुझे 40 गुणा बढ़ाकर प्रदान कर दिया।

इसी तरह तंज़ानिया के अमीर साहिब ने लिखा कि एक नए अहमदी उबैद कोवी साहिब वर्णन करते हैं कि बताते हैं कि राजगीरी (मिस्त्री) मेरा पेशा है और समय पांच महीने से कोई विशेष काम नहीं मिल रहा था बड़ी कठिन परिस्थितियां थीं बीवी-बच्चे भी मुश्किल से रह रहे थे बड़ी मुश्किल से गुज़ारा हो रहा था। एक दिन मुअल्लिम ने चंदा की तहरीक की। कहते हैं तब मुझे और अधिक परेशानी हुई क्योंकि जो राशि मेरे पास थी वह सिर्फ इतनी थी कि उस दिन के लिए पत्नी बच्चों की व्यवस्था हो सकती थी तो जब मुअल्लिम साहिब ने कहा कि अल्लाह तआला की राह में कुरबानी करने वाले को अल्लाह तआला बरकत डालता है तो मैंने फैसला किया कि यह राशि चंदे में दे देता हूँ अत: ऐसा ही किया और उसके बाद यह विचार मुझे आया कि आज मेरे बच्चे क्या खाएंगे यही सोच रहा था अब कुछ देर गुज़री थी कि मुझे यह संदेश मिला कि कहीं निर्माण हो रहा है तुरंत वहां जाकर नाप आदि करो इस के साथ, मुझे वेतन के रूप में पहले से कुछ पैसे दिए गए थे। मैं बड़ा हैरान हुआ कि पांच महीने से

मुश्किल में ग्रस्त था और जैसे ही अल्लाह तआला के रास्ते में दिया उसकी बरकतों के दरवाजे खुल गए तो उस दिन से जब से मैं अल्लाह तआला के रास्ते में दिया मेरे हालात अब बदल गए हैं। अब कभी चंदा नहीं छोड़ूंगा। नए अहमिदयों को भी अल्लाह तआला इन तजुर्बों से गुज़ारता है।

माली अफ्रीका का अन्य देश है। वहां एक आदमी लासीना साहिब हैं इन्हें तीन चार साल पहले बैअत की तौफीक मिली। उन्होंने अपनी मामूली आय से पांच सौ फ्रैंक सीफह चंदा दिया और कहते हैं कि जमाअत अहमदिया में शामिल होने और चंदों के अदा करने से पहले व्यवसाय ठीक नहीं चल रहा था लेकिन चंदे की बरकत से व्यवसाय में अल्लाह तआला ले असामान्य बरकत दी है और अब अल्लाह तआला की कृपा से वह मूसी भी हैं और पांच सौ की बजाय पहले पांच सौ चंदा दिया था उन्होंने तहरीक जददी में इस समय अब पैंतीस हजार फ्रैंक सीफह मासिक चंदा अदा करते हैं इन के ग़ैर अहमदी दोस्त उनके व्यवसाय में वृद्धि को देखकर सोचते हैं कि लगता है कि शायद जमाअत उनकी मदद कर रही है।

फ्रांस से एक नए अहमदी हमज़ा साहिब लिखते हैं कि बैअत करने के बाद जब मुझे जमाअत में चंदे की प्रणाली का पता चला तो उस समय मेरी वित्तीय स्थिति बहुत कमज़ोर थी। मेरे पास इतना पैसा नहीं था मुझे कुछ अहमदी दोस्तों ने बताया कि चंदे में बड़ी बरकत है। ख़ुदा तआला इसके बदले में कई गुना बढ़ाकर लौटा देता है कहते हैं बहरहाल मेरे पास साठ यूरो थे मैंने सोचा कि अल्लाह तआला के रास्ते में चंदा देता हूँ। बाकी जो होगा देखा जाएगा हो सकता है कहते हैं अब चंदा दिए हुए कुछ दिन ही बीते थे कि मेरी बैंक स्टेटमेंट घर पर आई तो मैंने देखा कि मेरे खाते में छह सौ यूरो कहीं से आए हुए हैं पता करने पर पता चला कि सरकार ने मेरे छह सौ यूरो देने थे जो पहले उनके रिकॉर्ड में राशि नहीं थी इस तरह जो रकम मैंने चन्दें में दी थी, अल्लाह तआला ने मुझे कई गुणा बढ़ा कर वापस कर दी जिस का मुझे वहम भी नहीं था।

तंज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि अहमद सानी साहिब Dodoma क्षेत्र से सम्बन्ध रखते हैं और मूसी भी हैं उन्होंने अपना वादा पचास हज़ार शिलिंग लिखवाया हुआ था जो बहुत पहले पूरा अदा कर दिया था फिर उन्होंने पिछले महीने सपने में मुझे देखा कि मैं उनके घर गया हूं और मैंने उनसे पूछा कि आप पृथ्वी से सोना निकालने का काम करते हैं, और उन्होंने जवाब दिया, हां, लेकिन यह काम अच्छी तरह से नहीं चल रहा है। कहते हैं मैंने उन की तरफ देखा और साथ ही कहीं से ज़ोर से आवाज़ आती है कि तहरीक जदीद का चन्दा बढ़ाओ। सानी साहिब जो हैं यह हिक्मत का देसी दवाइयों का काम करते हैं। इस सपने के बाद अल्लाह तआला ने उनके हाथ में असामान्य बरकत डाली और पिछले एक महीने से दूर से उनके पास मरीज आने लगे और लगातार बढ़ने शुरू हुए और कहा कि सपने के बाद, पिछले एक महीने में, उन्होंने 425,000 शिलिंग से अधिक तहरीक जदीद का चन्दा अदा किया और अपने क्षेत्र में सबसे ज्यादा चन्दा अदा करने वाले हैं।

भारत बैंगलोर एक ईमानदार युवक बेरोज़गार थे और रोज़गार की कमी के कारण घर की मासिक किस्त अदा नहीं कर सक रहे थे। तहरीक जदीद के इंस्पेक्टर कहते हैं कि मैं उन के घर गया परन्तु जब सचिव ने मुझे बताया तो मैं चुप हो गया लेकिन उन्होंने ख़ुद ही मुझ से पूछा आप मुझे कुछ कहना चाह रहे हैं। इस पर मैंने कहा कि मैं पूरी तरह से आपकी परिस्थितियों को नहीं जानता था। मुझे लगा कि मैंने तो आपसे एक लाख रुपए का वादा लेने का इरादा रखता था परन्तु अब आप के हालात का पता चला है तो मैं ख़ामोश हो गया। आप अपनी ताकत के अनुसार जो चाहें लिखवा दें। इस पर उन्होंने कहा कि आप एक लाख रुपए का वादा लिख लें और कहते हैं मैं बहर हाल अल्लाह तआला पर भरोसा करता हूं। इन्शा अल्लाह अदायगी भी हो जाएगी। अत: अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाया दोबारा उन को नौकरी मिल गई और बहुत अच्छी जगह पर मिली और उन्होंने पिछले साल का और इस साल का भी दो साल का वादा अदा कर दिया।

मिसिसिपी एक द्वीप है। वहां के मुबल्लिग़ सिलिसिला लिखते हैं कि यह बड़ा ग़रीब देश है। बहुत कठिन परस्थिति में लोग अपने घर की सब्ज़ियां आदि बेच कर बहुत मुश्किल से गुज़ारा करते हैं। एक अहमदी ड्यूड रब्बी साहिब एक मोटरसाइकिल की दुकान में काम करते हैं, सबसे अधिक चन्दा देते हैं, वह बताते हैं कि अदभुत मामला है मैं जितना चन्दा अदा करता हूं पैसे महीने के अंत में वापस आ जाता है, कहते हैं कि एक दिन इन की पत्नी ने कहा कि तुम क्यों इतना ज़्यादा चन्दा अदा करते हो। कहने लगे अल्लाह तआला यह चन्दा मुझे दोगुना कर के वापस कर देता हैं इस लिए मैं अदा करता हूं। फिर उन्होंने अपनी पत्नी के सामने ही एक राशि चंदे में अदा की कहने लगे कि देख लेना अल्लाह तआला मुझे यह राशि ज़रूर वापस कर देगा तो ऐसा ही हुआ और महीने के अंत में दुकान के मालिक ने अपने सभी कर्मचारियों को बोनस दिया और जो राशि बोनस में मिली वह चन्दे की रकम से अधिक थी। महोदय अल्लाह तआला की कृपा से वित्तीय कुरबानी में दिनों दिन बढ़ते चले जा रहे हैं।

कनाडा के अमीर साहिब ने लिखा कि सेक्रेटरी तहरीक जदीद लजना ने दौरा के दौरान बहनों को बताया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने जब तहीरक की थी तब कहा था कि उस समय आरम्भ में आप ने कहा कि आधा वेतन या पूरा वेतन तहरीक जदीद में दो तो कहती हैं कि एक बहन जो पार्ट टाइम नौकरी करती हैं लेकिन उनकी तीव्र इच्छा थी कि अगर मुझे नौकरी मिल जाए तो मैं पूरा वेतन चन्दा में अदा करूं। अत: उन्हें फुल टाइम जाब मिल गई जिसका पाँच हज़ार डॉलर वेतन निर्धारित हुआ था, जो उन्होंने तहरीक जदीद में प्रस्तुत किया। इसी प्रकार और कई उदाहरण हैं।

अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत के आरम्भ से लेकर मुखलेसीन पुराने अहमदी भी, नए आने वाले सारे अहमदी भी अल्लाह तआला के व्यवहार का अनुभव रखते हैं। उन की कुरबानियों की घटनाएं मैंने सुनाई हैं और इस ज़माना में विशेष रूप से माली कुरबानियों का विषय भी जमाअत अहमदिया की विशेषता है । अहमदियों की बहुमत इस बात का एहसास रखती है कि यह समय जो इस्लाम के प्रकाशन की सम्पूर्णता का ज़माना है जिसके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है जो कि विभिन्न भाषाओं में कुरआन के प्रकाशन और अनुवाद के माध्यम से हो रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों के प्रकाशन और जमाअत के लिट्रेचर के माध्यम से हो रहा है। मस्जिदों के निर्माण के माध्यम से हो रहा है। मिशन घरों की स्थापना के माध्यम से हो रहा है, जामिया की स्थापना के द्वारा किया जा रहा है। अफ्रीका में भी, एशिया में में भी, उत्तरी अमेरिका में भी, इंडोनेशिया में भी, यूरोप में भी स्थापित किया गया है। जहां से मुरब्बियान और मुबल्लिग़ पास हो कर इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं जब यह सारी बातें अहमदियों के ज्ञान में आती हैं उन्हें पता लगता है कि इसके लिए वित्तीय कुरबानी की भी ज़रूरत है और फिर वह वित्तीय कुरबानी करते हैं उसी तरह जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद ने भी फरमाया कि सृष्टि से सहानुभूति ईमान का अंग है इस सहानुभूति के अधीन अस्पतालों स्कूलों की स्थापना और इस के अतिरिक्त भी जमाअत में राहत प्रणाली की स्थापना हैं। यह सभी कुछ ईमानदारों की कुरबानियों के माध्यम से हो रहा है जिन्हें अल्लाह तआला पर यह विश्वास है कि वह उन की कुरबानियों को इस दुनिया में और अगली दुनिया में भी नवाज़ेगा। इन्शा अल्लाह। यदि कहीं कमी है तो कई बार यह देखा गया है कि कभी-कभी प्रशासन की तरफ से लोगों को ध्यान नहीं दिलाया जाता। अगर इस तरफ लोगों को ध्यान दिलाया जाता रहे तो लोगों को ध्यान भी होता है। एक बार ध्यान दिलाने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि

यह बात भी सम्भव है कि अधिकतर लोगों को अब तक कहा भी नहीं जाता कि अभी तक हमारे सिलिसले के लिए चन्दे की भी ज़रूरत है। आप फरमाते हैं कि बहुत से लोग हैं रो रो कर बैअत कर के जाते हैं अगर उन को कहा जाए तो ज़रूर चन्दा देंगे परन्तु ध्यान दिलाना ज़रूरी है। अप फरमाते हैं कि प्रत्येक कमज़ोर भाई को भी चन्दा में शामिल करो।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 41 हाशिया प्रकाशन 1985 ई यू. के)

(और एक-दूसरे को तहरीक करो।) और यह बात जैसा कि मैंने कहा आज भी उसी तरह ठीक है जब ध्यान दिलाया जाए तो लोगों को ध्यान होता है और फिर इसलिए अब जब मैं ने कहा था तहरीक जदीद और वक्फ जदीद कि संख्या बढ़ाएं तो संख्या भी बढ़ रही है ध्यान दिलाने पर तो अहमदी बच्चों में भी कुरबानी का एक उत्साह और जोश नज़र आता है।

अत: नकोरो केन्या से मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि अबू बकर कीबिय साहिब जो इस समय वहाँ के सदर जमाअत हैं और केन्या रक्षा फोर्स में बतौर हवलदार काम करते हैं यह बहुत निष्ठावान अहमदी हैं। बावजूद मस्जिद से दूर केंट क्षेत्र में रहने के नियमित लंबा सफर कर के जुम्अ: की नमाज़ के लिए हाज़िर होते हैं और कोशिश करते हैं कि अपनी तीन बेटियों को भी साथ लाएं। केंट में अपने घर में विशेष रूप से एम टी. ए की डिश लगवाई है । ख़ुद भी और अपने साथ काम करने वाले फौजियों को एम टी ए के प्रोग्राम दिखाते हैं। कहते हैं मैं कुछ समय तहरीक जदीद के महत्त्व को उजागर कर रहा हूं। कुछ दिन पहले जुम्अ: की नमाज़ के बाद उन्होंने मुरब्बी साहिब से पूछा वर्णित कि मेरी बच्चियां भी यह ख़ुत्बा सुनती हैं और महीने के दौरान

एक मेहमान उनके घर आए और वापस जाते हुए मेरी छोटी बेटी समीरा को जिस की उम्र अभी सिर्फ पांच साल है उसके हाथ में पच्चीस शिलिंग पकड़ा दिए जब मेहमान चला गया तो यह बच्ची अपने पिता के पास आई और बीस शिलिंग मुझे देते हुए कहा कि यह मेरे द्वारा चंदा तहरीक जदीद अदा कर दें और बाकी पांच शिलिंग की मैं कुछ खाने की चीज़ें ले लूंगी।

फिर लाइबेरिया से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि तहरीक जदीद वसूली के दौरान हम एक जमाअत मागमा में एक घर पहुंचे। उन्हें बताया कि तहरीक जदीद क्या है और इसमें सभी शामिल हो सकते हैं बच्चे भी और बड़े भी। जो आप सामर्थय रखते हो इसके अनुसार भाग ले सकते हैं इस घर में एक छोटी सी बच्ची थी जिस की उम्र छह सात साल होगी उसका नाम बन्तो समावीरा है वह डिब्बे में छोटी चीजें बेच रही थी हमारी बातें सुनकर उसने कहा कि बच्चे भी इसमें शामिल हो सकते हम ने कहा बेशक शामिल हो सकते हैं। यह सुनकर वह दौड़ती हुई अंदर गई और बीस लाइबीरियन डॉलर लेकर आई और कहा कि मेरे पास तो यही हैं मुझे भी शामिल कर लें तो उसके इस भोलेपन पर उसके माता पिता ने भी चंदा अदा कर दिया।

अत: ये कुरबानियां केवल अहमदियों की ही विशेषता है चाहे वे बच्चे हैं या बड़े हैं और दुनिया के किसी भी क्षेत्र में रहते हैं। बच्चों की कुरबानी वास्तव में अच्छी प्रकृति की आवाज़ हैं अल्लाह तआला करे कि क़यामत तक जमाअत में ऐसे बच्चे और बड़े पैदा होते रहें जो अल्लाह तआला के लिए कुरबानी करने का जोश और भावना रखने वाले हों और अपने वादों को पूरा करने वाले हों।

जैसा कि नवंबर में तहरीक जदीद साल का ऐलान होता है आज मैं तहरीक जदीद के चौरासीवें (84) साल के शुरू होने की घोषणा करता हूं पिछले साल के कुछ डेटा भी प्रस्तुत करूंगा। तहरीक जदीद का तरासीवां (83) वर्ष समाप्त हो गया और चौरासीवां (84) साल जैसा कि मैंने कहा एक नवंबर से शुरू हुआ है और जो रिपोर्ट अभी तक आई हैं उसके अनुसार इस साल तहरीक जदीद के वित्तीय प्रणाली में एक करोड़ पच्चीस लाख अस्सी हजार पाउंड वित्तीय कुरबानी जमाअत को पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। धन्यवाद यह वसूली पिछले साल की तुलना में अल्लाह तआला की कृपा से पंद्रह लाख तैनतीस हज़ार पाउंड अधिक है और सम्पूर्ण प्राप्ति के आधार पर पाकिस्तान को निकालकर जर्मनी पहले नंबर पर है जर्मनी में सौ मस्जिदों में भी दोस्त कुरबानी कर रहे हैं ख़ुद्दाम अंसार लजना ने अपने ज़िम्मे बड़ी बड़ी रकमें ली हुई हैं लगभग तीन लाख यूरो तो इसके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं इतने अमीर लोग भी वहां नहीं हैं लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से उनमें कुरबानी का जोश है। अल्लाह तआला उनके मालों में भी विस्तार पैदा करे और इन कुरबानियों को स्वीकार करे नंबर दो पर ब्रिटेन, नंबर तीन पर अमेरिका, नंबर चार कनाडा, नंबर पाँच भारत, नंबर छह ऑस्ट्रेलिया, नंबर सात इंडोनेशिया और आठ नम्बर मध्य पूर्व की एक जमाअत है एक और इसी तरह नौ भी मध्य पूर्व की जमाअत है दसवें नंबर पर गाना है।

प्रति व्यक्ति भुगतान के लिहाज से भी पहले और दूसरे नंबर पर तो मध्य पूर्व की जमाअतें हैं फिर स्विट्जरलैंड है फिर यू.के लेकिन यू.के में जो संख्या है शामिल होने वालों की वे इस संख्या से बहुत कम है जो उनके जलसे मैं शामिल होती है हांलाकि जलसा में भी पूरी संख्या शामिल नहीं होती इसका मतलब यह है कि इस ओर पूरा ध्यान केंद्रित नहीं किया जा रहा है। फिर पांचवां नम्बर पर संयुक्त राज्य है छठे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया सातवें नम्बर पर जर्मनी और जर्मनी की जो संख्या है शामिल होने वालों की वे इस संख्या से निकटतम है काफी करीब है जो उनके जलसा में शामिल होती हैं इसका मतलब वहाँ सेक्रेटरी तहरीक जदीद ने और प्रासंगिक सचिव ने जोड़ने की अच्छी कोशिश की है। फिर स्वीडन 8 वें नम्बर पर है, फिर नॉर्वे है और उसके बाद कनाडा है।

अफ्रीका के देशों में वसूली की दृष्टि से ये जमाअतें हैं , घाना है, नाइजीरिया है, फिर माली है, चार नंबर पर कैमरून है और फिर लाइबेरिया है और फिर बैनिन है।

शामिल होने वालों की कुल संख्या जिस पर मैंने कुछ वर्षों से कहा था कि अधिक ज़ोर दिया जाए। रकम जमा हो दी जाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि प्रत्येक चंदा लेना चाहिए चाहे कोई एक पैसा ही दे। जिस तरह बूंद बूंद से नदी बनती है उसी तरह एक पैसा से भी पर्याप्त राशि एकत्रित हो जाती है।

(उद्धरित मलफूज़ात भाग 6 पृष्ठ 40 हाशिया प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो बहरहाल में ने शामिल होने वालों की संख्या बढ़ाने के लिए कहा था। अल्लाह तआला के फज़ल से जो शामिल हुए इस वर्ष यह संख्या 16 लाख से अधिक है और इस वर्ष अल्लाह तआला के फज़ल से 2 लाख से अधिक नए शामिल होने वालों की वृद्धि हुई है और इसमें अफ्रीकी देशों में वृद्धि करने वालों में नाइजीरिया शीर्ष पर है जहां 57 हज़ार से अधिक संख्या में नए लोग चंदे की प्रणाली में शामिल हुए और इसके बाद कैमरून है यहाँ तीस हज़ार शामिल हुए फिर बेनिन है और आइवरी कोस्ट, नाइजीरिया, गिनी कनाकरी, माली, गिनी बिसाउ, जाम्बिया, सेनेगल, बुर्किना फासो उल्लेखनीय हैं और अफ्रीका के अलावा बाहर की जमाअतों में इंडोनेशिया नंबर एक है फिर जर्मनी फिर ब्रिटेन फिर भारत फिर अमेरिका और कनाडा उनके शामिल होने वालों में बढ़ोतरी हुई है। बहरहाल शामिल होने वालों की संख्या में अभी बहुत गुंजाइश है और इस तरफ जमाअतों को ध्यान देना चाहिए।

पाकिस्तान में वहां की इमारतों को थोड़ा निज़ाम बदला है। इसलिए ज़िला के स्थान पर पहली शहरी जमाअतों को कुरबानी का जो चार्ट प्रस्तुत किया गया है वह यह है कि रब्वा एक नम्बर पर है फिर इस्लामाबाद है फिर लाहौर टाउनशिप है फिर अज़ीज़ आबाद कराची है फिर दिल्ली गेट लाहौर है फिर रावलपिंडी शहर है फिर मुल्तान पेशावर क्वेटा और गुजरांवाला।

ज़िला स्तर पर पाकिस्तान में जो अधिक कुरबानी करने वाले जो ज़िले हैं वे सरगोधा, फैसलाबाद, उम्र कोट नंबर तीन, गुजरात नंबर चार, नारोवाल पाँच, हैदराबाद छह, मीरपुर ख़ास सात, बहावलपुर आठ और ओकाड़ा ये दोनों बराबर हैं, टोबा टेकसिंह नौ और कोटली आज़ाद कश्मीर दस।

जर्मनी की पहली दस जमाअतें नोयस नंबर एक फिर रोईडर मार्क फिर वाइन गर्डन फिर नीडा फिर पन्नेग बर्ग फिर मेहदी आबाद फिर हाईडल बर्ग फिर लिम्बर्ग फिर कील और फलवरीनज़ हायम और उनकी जो दस बड़ी इमारतें हैं वे हैम्बर्ग फ्रैंकफर्ट मूइर फीलडन ग्रास गराओ वज़ीर बादन, डिटसन बाख़ मिन्हायम और रीड शटड और डारम शटड और औख़ल बाख़

बर्तानिया की दस अदायगी के आधार पर बड़ी जमाअतें जो हैं इन में नम्बर एक मस्जिद फज़ल नंबर दो वोस्टर पार्क नंबर तीन बर्मिंघम साउथ फिर ब्रैड फोर्ड साउथ फिर पटनी फिर ग्लासगो फिर इस्लामाबाद फिर न्यू मोलडिं फिर जलनघम फिर स्कनथोरप।

और प्रति व्यक्ति अदा करने की दृष्ट से जो क्षेत्र हैं साउथ वेस्ट नंबर एक है तो पूर्वोत्तर नंबर दो, इस्लामाबाद नंबर तीन, मिड लैण्ड नंबर चार, स्कॉटलैंड नंबर पाँच।

अमेरिका की जमाअतें सिलिकॉन वैली नंबर एक, फिर ओश कोश नंबर दो, सेयटल नंबर तीन, डेट्रायट चार, यॉर्क पांच, लॉस एंजिल्स ईस्ट छह, सिल्वर स्प्रिंग, सेंट्रल जर्सी, शिकागो साउथ वेस्ट, अटलांटा, लॉस एंजिल्स इन लेंड।

वसूली के मामले में कनाडा की स्थानीय अमीरात वान नंबर एक फिर पीस विलेज, बरीमटन, वेंकुवेर और मिसिसॉगा।

भारत के प्रान्तों में केरल कर्नाटक नंबर तीन जम्मू, कश्मीर नंबर चार, तेलंगाना पांच, तमिलनाडु छह, उड़ीसा सात पंजाब आठ बंगाल नौ दिल्ली और दस महाराष्ट्र।

दस बड़ी जमाअतें जो हैं इस में पहले नंबर पर कालीकट केरल, पत्थापेरम केरल, फिर नंबर तीन कादियान, नंबर चार हैदराबाद, नंबर पांच कलकत्ता, नंबर छह बेंगलुरु, फिर केनानूर टाऊन फिर पैंगाडी फिर माथोटम फिर केरोलाई।

ऑस्ट्रेलिया की दस जमाअतों में से नम्बर एक कासिल हिल, मेलबोरन, ब्रुक, ए सिटी कैमब्रा, माडर्न पार्क, ब्रिसबेन, लोगन, एडिलेड साउथ, पलंपटन, मेलबोरन लांग वॉरैन, पीज़थ, मेलबोरन पूर्व।

अल्लाह तआला इन सबके मालों और नफ़सों में बरकत अदा प्रदान फरमाए।

इसके बाद मैं एक और संक्षिप्त तहरीक भी करना चाहता हूँ जो यू.के के लिए सामान्य है और दुनिया के परोपकारी आदमी हैं, जो सामर्थ्य वाले हैं उनके लिए है और वह मस्जिद बैयतुल फुतूह के इस जले हुए हिस्से के बारे में है। लगभग दो साल का समय तो बीत गया जब मस्जिद बैयतुल फुतूह में आग लग गई थी। आजकल कुछ वर्षों से 1984 ई से ख़िलाफत के यहाँ स्थापना की वजह से दुनिया भर से आदमी भी यहां आते हैं उनके आवास हैं और विभिन्न फंगशनज़ होते हैं अब

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

तो दुनिया के देशों के उप संगठनों के भी और जमाअतों के भी बड़े प्रतिनिधिमंडल वैसे भी सारा साल आते रहते हैं उनके आवास आदि का भी मामला रहता है मस्जिद के साथ संबद्ध हॉल और कमरे होते थे पहले वहाँ प्रबंधन हो जाता था जलने के बाद अब इसमें काफी तंगी पैदा हो रही है और उसके पुनर्निर्माण की योजना तो बना ली गई है। जगह तो थोड़ी सी अधिक है लेकिन बहरहाल योजना बड़ी है हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने जब इस मस्जिद की परियोजना की तहरीक की थी तो शुरू में पांच लाख की तहरीक आप की थी फिर बाद में मस्जिद के मुख्य हिस्से को छोड़ने की वजह से दूसरे स्थान पर कहीं अधिक खर्च हो गया था फिर पाँच लाख की और तहरीक आप को करनी पड़ी। उसके बाद भी अलग काम धीरे धीरे होते रहे जो जमाअत अपने बजट से खर्च करती रही और काफी हद तक पूरा हो गया था लेकिन बहरहाल जो भी हुआ यह हादसा हुआ। अल्लाह तआला की यही नियति थी। वह आग लग गई और यह बड़ा हिस्सा जल गया, तो इसकी जो नई योजना बनाई गई है इस में भी लगभग 11 मिलिय रकम खर्च होगी। जिनमें से लगभग आधी मौजूद है और जो बीमा आदि से प्राप्त हो गई है या अन्य लोगों ने कुछ चन्दे दिए हैं। आधे से अधिक की लगभग ज़रूरत पड़ेगी और इसके लिए बहरहाल मित्रों ने ही कुरबानी करनी है जिस तरह हमेशा करते रहे हैं।

मस्जिद बैयतुल फुतूह को उस समय जब कि वह सारा पूर्ण था वास्तुकला के आधार पर और सौंदर्य के आधार पर और बड़ी इमारत के अनुसार जो यूरोप की पचास बड़ी इमारतों हैं उनकी सूची में सूचीबद्ध किया गया है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने जब यह योजना दी थी तो यह भी घोषणा की थी कि मुझे उम्मीद है कि यूरोप की यह सबसे बड़ी मस्जिद होगी बल्कि और कोई मस्जिद इससे बड़ी नहीं होगी। उन्होंने कहा था कि सात आठ हज़ार लोग जो आ सकें तो हमारी जरूरतें पूरी हो जाएँगी लेकिन मस्जिद की जो गुंजाइश थी उस में हालों सहित दस हज़ार के लगभग लोग इसमें समा सकते थे।

(उद्धिरत अल्फज़ल इन्ट्रनेश्नल दिनांक 7 से13 अप्रैल 1995 ई दिनांक 23 से29 मार्च 2001ई पृष्ठ 6)

लेकिन वह क्षमता भी दो तीन साल के बाद ही कम हो गई तो यहां प्रशासन को घोषणा करनी पड़ती थी कि दूसरी जमाअतों के लोग यहां ईद की नमाज़ पढ़ने न आएं। अपने क्षेत्रों में पढ़ें लेकिन इसके बावजूद जैसा कि लोगों को पता है कि हमें पार्क में अलग मार्की लगानी पड़ती थी और ईद का प्रबंधन करना पड़ता है बहर हाल ज़रूरत तो है और जिस हद तक हम इसे बेहतर और बड़ा बना सकते हैं, हमें बनाने की कोशिश करनी चाहिए। जिनके पास पहले निर्माण में भाग लेने का अवसर नहीं था। उन्हें तो ज़रूर लेना चाहिए। क्योंकि यह यू.के जमाअत की योजना है इसलिए आम तौर पर तो जैसा कि मैंने कहा यू.के के अहमदियों का ही काम है जमाअत का ही काम है इस में भाग लेना चाहिए और बाहर की दुनिया के भी सामर्थय वाले दोस्तों को इसमें भाग लेना चाहिए। उप संगठनों को भी उप संगठनों की स्थिति से, जमाअतों को जमाअतों की स्थति से, बड़ी बड़ी जमाअतें जो हैं उन्हें इस में भाग लेना चाहिए क्योंकि पूरे साल ही अब तो यहाँ बाहर से मेहमान आते हैं और यू.के की जमाअत हर महीने उनकी मेहमान नवाज़ी भी करती है बल्कि यह संख्या तो अब हज़ारों में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि मस्जिद शाही को आग लग गई तो लोग दौड़े दौड़े बादशाह सलामत के पास पहुंचे और अर्ज़ किया कि मस्जिद को आग लग गई इस खबर को सुनकर राजा तुरंत सिज्दे में गिर गया और धन्यवाद किया। साथ वालों ने आश्चर्य से पूछा कि बादशाह सलामत यह कौन सा धन्यवाद का समय है कि अल्लाह के घर को आग लग गई है और मुसलमानों के दिलों को कठोर सदमा है तो राजा ने कहा कि मैं एक ज़माना से सोचता था और ठंडी आह भरता था कि इतनी बड़ी भव्य मस्जिद जो बनी है और इस इमारत के माध्यम से असंख्य लोगों को लाभ पहुंच रहा है। कोई ऐसा प्रस्ताव हो कि इस नेक काम में मेरा भी कोई हिस्सा होता लेकिन चारों ओर से मैं उसे ऐसा पूर्ण और त्रुटि रहित देखता था कि मुझे कुछ सूझ न सका था कि इस में मेरा सवाब किस प्रकार होगा? अत: आज अल्लाह तआला ने मेरे लिए सवाब पाने की एक राह निकाल दी। और अल्लाह बहुत जानने वाला और सुनने वाला है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ387 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए जैसा कि मैंने पहले कहा था, जो इस कुरबानी में पहले भाग नहीं ले सके। उन्हें ज़रूर भाग लेना चाहिए। अपनी रकम के जो भी वादे करें तीन साल की अवधि में उन्हें पूरा करने की कोशिश करें, लेकिन न्यूनतम तीसरा हिस्सा पहले साल में ही ज़रूर अदा करें।

इस परियोजना का जो डेटा है वह ये हैं। पहले covered क्षेत्र चार हज़ार सात सौ स्क्वायर मीटर था और अब उसका जो नया प्लान बना है उसके अनुसार पांच हजार आठ सौ स्क्वायर मीटर है और नासिर हॉल की छत भी थोड़ी सी उठाई गई है और इसके अलावा प्रथम जो मंजिल होगी नूर हॉल होगा उसकी छत भी फिर दूसरी मंज़िल के कार्यालय होंगे, फिर तीसरी मंजिल और चौथी मंजिल पर दफतर और हॉल और अतिथियों के लिए कमरे होंगे। फिर यह गेट से ज़रा हटाकर बनाई जाएगी ताकि कुछ पार्किंग की जगह मिल जाए वाहनों की आवाजाही में आसानी रहे। पैदल चलने वालों के लिए आसानी रहे। महिलाओं और पुरुषों का रास्ता अलग अलग हो। तो यह परियोजना है अल्लाह तआला फज़ल फरमाए और यू. के जमाअत को इस परियोजना को पूरा करने की तौफीक़ दे

नमाज़ों के बाद, मैं एक नमाज़े जनाज़ा पढाऊंगा। जो यमन के अदरणीया आदिल हमूज़ह नाख़ूज़ह साहिब का है। 14 अक्तूबर को, दिल की हरकत बन्द हो जाने के कारण चालीस साल की आयु में उन का वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप के बेटे तारिक अहमद साहिब बताते हैं कि बैअत से पहले मेरे पिताजी नमाज़ के पाबन्द नहीं थे लेकिन बैअत के बाद न केवल नियिमत से नमाज़ें अदा करने लगे बल्कि हमें धर्म के महत्व और जमाअत के साथ संबंध को मज़बूत करने के बारे में भी हमेशा समझाते रहते। हमें एक साथ लेकर, घर पर और जमाअत के साथ नमाज़े पढ़ते थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें पढ़ कर हमें सुनाते। एम टीय ए को फ्रीकवेंसी वाले कार्ड हमेशा अपनी जेब में रखते। जहां भी जाते यह कार्ड वितरित करते। अहमदियत में शामिल होने से पूरी तरह से उनका जीवन बदल गया और हमेशा उन पर आशीर्वाद और ख़ुशी के चिन्ह नज़र आते ।

एक अहमदी दोस्त अली अलग़रबानी साहिब बताते हैं कि बैअत से पहले मरहूम मुझे और कुछ और दोस्तों को अपने घर बुलाकर अहमदियत से संबंधित पूछा करते थे अत: हम ने उन्हें विभिन्न मस्ले, दज्जाल का निकलना, मसीह का जीवन और वफात और महदी अलैहिस्सलाम का निकलना आदि समझाए। मरहूम को हमारी बातें और अकीदे बहुत पसंद आए। जमाअत के ख़िलाफ जो बात सुनते ख़ुद उसका अनुसंधान करते। उनकी बैअत करने से पहले एक बार हम पर झूठे आरोप लगा कर जेल में डाल दिया गया लेकिन मरहूम ने बावजूद उस समय ग़ैर अहमदी होने के बड़ी बहादुरी से हमारा साथ दिया और हमारा बचाव किया।

आपके अन्य रिश्तेदारों ने यह भी लिखा है कि बैअत के बाद पूरी तरह से आपका जीवन बदल गया है। धार्मिक मामलों के सिलसिले में बात करते तो हमेशा कुरआन की आयतों को पेश करते, हदीसों को पेश करते, संदर्भ देकर बात करते हम हैरान होते थे कि आप ने इतनी धार्मिक शिक्षा इतनी जल्दी कैसे और कहाँ से सीख ली। हम पूछते मरहूम बताते ये सभी ज्ञान उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सीखे हैं क्योंकि वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नूर हासिल करते थे।

मृतक ने अपने पीछे रहने वालों पत्नी के अतिरिक्त एक बेटी यादगार छोड़े हैं। उनके परिवार के अधिकांश सदस्य अल्लाह के फज़ल से अहमदी हैं। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा फरमाए माफी और दया का व्यवहार फरमाते हुए अपने प्रियजनों के कदमों में जगह दे और उनकी पत्नी और बच्चों का भी हाफिज़ और नासिर हो। उनकी ज़रूरतों को पूरा करने वाला हो। उन्हें नेक सालेह बनाए और अपने पिता के नक्शे कदम पर चलने की तौफीक प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -4)

संस्थापक जमाअत अहमदिया अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह तआला की तरफ से दो प्रमुख उद्देश्यों के साथ भेजा गया हूँ और यह इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार है कि एक तो लोगों को अपने निर्माता के अधिकार अदा करने की तरफ ध्यान केंद्रित कराऊं और दूसरा यह कि अपने साथियों के अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान केंद्रित करने के लिए कहूं। अतः अगर दूसरों के अधिकार अदा करने की कोशिश की जाए और शांतिपूर्ण तरीके से इस दुनिया में रहने की कोशिश की जाए तो यही प्यार, मुहब्बत और प्रेम है इस के बिना आप ऐसा नहीं कर सकते।

हमें विश्वास है कि सभी धर्म अल्लाह तआला की तरफ से हैं। मूल शिक्षा हर धर्म की सच्चाई पर आधारित थी और अल्लाह तआला की तरफ से थी और वह एक थी।

प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधियों से हुज़ूर अनवर का इन्ट्रविय़ू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

25 अगस्त 2017 (दिनांक शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय क्षेत्र में गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दफतर की डाक देखी और विभिन्न प्रकार के दफतर के कामों में व्यस्त रहे।

आज अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी का 42वां जलसा सालाना शुरू हो रहा था और आज जलसा सालाना का पहला दिन था। दोपहर 1 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने झंडा फहराने के लिए जलसा गाह के चारों हालों के बीच एक खुले लॉन में पधारे। हुज़ूर अनवर ने अहमदियत का झण्डा लहराया जब कि अमीर साहिब ने जर्मन का राष्ट्रीय ध्वज लहराया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दुआ कर वाई।

एम.टी.ए इंटरनेशनल की जलसा गाह से लाइव प्रसारण यहां सुबह से ही शुरू हो चुकी थीं। झण्डा लहराने का यह आयोजन भी दुनिया भर में प्रसारित किया गया था। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा जुम्अ: फरमाया जिसके साथ सभा का उद्घाटन हुआ। ख़ुत्बा जुम्अ: का पूरा पाठ अख़बार बदर 14, अक्तूबर 2017, संख्या 37 में प्रकाशित हो चुका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: तीन बजे तक जारी रहा। यह ख़ुत्बा जुम्अ: का एम टी ए इंटरनेशनल पर लाइव सीधा प्रसारण हुआ। और स्थानीय रूप से निम्नलिखित 14 भाषाओं में अनुवाद किया गया। अरबी, जर्मन, अंग्रेजी, फ्रेंच, फारसी, तुर्की, बांग्लादेश, बूज़नीयन, बल्गेरियाई, अलबानीयन, रूसी, सवाहेली, स्पैनिश और पुर्तगाली।

इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधियों के साथ हुज़ूर अनवर का इन्ट्रविय़ू

ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने जुम्अ: की नमाज़ के साथ असर की नमाज़ जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ सम्मेलन कक्ष में पधारे जहां प्रेस सम्मेलन का आयोजन तीन बजकर तीस मिनट पर हुआ। नीचे लिखे एलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के पत्रकार और प्रतिनिधि मौजूद थे।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया

(1) T K8 KOCANI (मकदूनिया) (2) ग्लोब टीवी (ब्राजील) (3) T EURO TIMES (4) समाचार पत्र LA REPUBLICA (इटली) (5) अख़बार KURIER (ऑस्ट्रिया)

राष्ट्रीय मीडिया

(1) टीवी ZDF HEUTE (2) RTL 04 NT। (3) टीवी एन 24 (4) टीवी ARD MIMA (5) डी पी ए तस्वीरें (प्रिंट मीडिया) (6) डी पी ए प्रिंट (7) सार्वजनिक मंच (प्रिंट) (8) ई पी डी (प्रिंट)

स्थानीय मीडिया (1) टीवी, एस डब्ल्यू आर (2) एस डब्ल्यू आर रेडियो (3) बी एन एन (प्रिंट मीडिया) (4) ए समाचार (5) सोड वेस्ट प्रेस (प्रिंट) (6) BADISCHE ZEITUNG (प्रिंट)

***एक पत्रकार ने सवाल किया: हमें ब्राज़ील में जो अधिकांश ईसाई हैं, उन्हें यह बात समझाने में कठिनाई होती है कि इस्लामी चरमपंथ काधर्म नहीं है, जबकि कुरआन में कुछ आयतें पाई जाती हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया क्या आपके पास वे सूरतें या आयतें हैं जिसमें यह उल्लेख है? अगर आप इस्लाम के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में तेरह वर्ष तक दु:ख और कष्ट सहन करते रहे, और उस के बाद आप को अल्लाह तआला के द्वारा मदीना जाने की अनुमति मिली। आप के मदीना हिजरत करने की डेढ़ साल बाद मक्का के काफिरों ने आप पर फिर हमला किया। तेरह साल तक धैर्य करने के बाद तब कहीं जाकर उन्हें अपने पर होने वाले हमले का जवाब देने की अनुमति मिली और यह पहली अनुमति थी जो मुसलमानों को पलटवार करने की दी गई कि मक्का के काफिर जैसा हमला करते हैं उसी तरह उन्हें उत्तर दिया जाएगा। इसका उल्लेख सूरह 22 और आयत 40 और 41 में है। इस में है कि अब तुम्हें लड़ने की इज़ाज़त है क्योंकि अगर उन्हें अब भी न रोका गया, तो कोई यहूदी उपासना स्थल, चर्च, मंदिर और मस्जिद सुरक्षित नहीं रहेगा। जब अनुमति दी गई, तो इसे धर्म को बचाने के लिए दी गई थी आयत में उपासना स्थलों, चर्चों और मंदिरों का उल्लेख करने के बाद अंत में मस्जिदों का उल्लेख किया गया है। इससे पता चलता है कि इस्लाम व्यर्थ लड़ाई की अनुमति नहीं देता है। तब भी आप देख सकते हैं कि सभी युद्ध और योद्धा का परिवेश कुफ्फार के द्वारा बनाए गए थे और फिर मुसलमानों ने केवल इसका बचाव किया इसलिए सभी आयतें जिसमें प्रतिरक्षा की लड़ाइयों की अनुमति थी या जिसमें उसे रोका गया है इन आदेशों की हिक्मत हैं । ये काम बिना हिक्मत के नहीं हैं, जैसे कि आज के तथाकथित मुसलमान आतंकवादी समूह कर रहे हैं। यह केवल इस्लाम ही नहीं है जो अपनी आत्मरक्षा की अनुमति देता है बल्कि तौरात में भी पांच हज़ार से अधिक आयतें, यहां तक कि इंजील में भी कुछ आयतें हैं जिसमें लिखा है कि जब तुम पर ज़ुल्म हो तो उसका मुकाबला करो बावजूद हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम की इस शिक्षा के की जब कोई तुम्हारे एक गाल पर थपड़ मारे तो तुम दूसरा गाल भी उस के सामन कर दो। यह केवल जैसा करोगे वैसा भरोगे के सिद्धांत के अनुसार ही है, अन्यथा मुसलमानों को युद्ध शुरू करने और धर्म के संदर्भ में कभी भी अनुमति नहीं दी गई है, इसे विस्तार से वर्णित किया गया है कि इस में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। इस संदर्भ में, मैं दोपहर में इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को समझाऊंगा।

*** एक पत्रकार ने ख़ुद का परिचय करवाया कि इस का संबंध एस.डब्ल्यू. आर टी से है अहमदीया मुस्लिम जमाअत उदारवादी जमाअत है, समलैंगिकता के प्रति आपका दृष्टिकोण क्या है, अगर कोई ऐसा व्यक्ति आता है, तो क्या आप उसे स्वीकार करेंगे?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूँ। मेरी पवित्र किताब कुरआन कहती है कि यह एक बुरा कार्य है, यहां तक कि बाईबल में भी लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम की घटना वर्णन करती है और कुरआन की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। तो ऐसा काम है जिसे अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता तो उसके रसूल जिसे उसने भेजा है और उस की पवित्र पुस्तक में भी इसे नापसंद किया गया था, तो मैं उसे एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में कैसे पसंद करूं? लेकिन साथ ही मैं यह भी नहीं कहता कि उन के साथ बुरा व्यवहार किया जाना चाहिए।

*** पत्रकार ने कहा हुज़ूर यहां जर्मनी में दो मस्जिदें हैं जहां मुसलमान ख़ुद को लिबरल कहते हैं, जिसमें पुरुष और महिलाएं एक साथ मिलकर नमाज़ पढ़ती हैं और वे समलैंगिकता को वैध मानते हैं, क्या यह एक गुमराह रास्ता नहीं है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जहाँ तक कंधे से कंधा मिला कर पुरुषों और महिलाओं का एक साथ नमाज़ का संबन्ध है तो यह एक ग़लत तरीका है। मर्द और औरतें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय एक ही हॉल में नमाज़ें पढ़ा करते थे, लेकिन तरीका यह था कि पुरुष पहले खड़े होते थे और महिलाओं को उनके पीछे खड़ा करते थे, और उनके पीछे एक तर्क और ज्ञान था, यदि मैं वह बयान करूं तो बहुत समय लगेगा और इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए समय कम हो जाएगा। इसलिए यह सही नहीं है लेकिन एक कमरे में वे नमाज़ पढ़ सकते हैं। मुझे याद पड़ता है कि यू.के में एक राजनीतिज्ञ मिले थे कि एक पार्टी के नेता भी हैं उन्होंने मुझ से यह सवाल किया था मैंने उन्हें भी यही जवाब दिया था कि यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर में हो चुका है लेकिन अब महिलाओं के आराम के लिए, वे स्वयं को हॉल में या कमरे में अलग महसूस करती हैं, और आज़ादी के साथ स्वतंत्र रूप से अपने बुर्के उतार कर इबादत कर सकती हैं। अन्यथा उन्हें बुर्का और पर्दा करना पड़ता है, पुरुषों के साथ नमाज़ पड़ने के लिए तो उन के लिए मुश्किल है। दूसरा जहां तक समलैंगिक के मस्जिद में आने का संबंध है तो अगर कोई मुसलमान समलैंगिक मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ना चाहता है और अपने गुनाहों की माफी मांगना चाहता है तो हमें उसे रोकना नहीं चाहिए और न हम इसे रोक सकते हैं। हम नहीं जानते कि हमारी मस्जिदों में कितने समलैंगिक आते हैं। कोई भी घोषित नहीं करता है कि मैं समलैंगिक हूं और अगर किसी ने यह घोषणा की है तो हम इसे रोक नहीं सकते हैं। यदि वे नमाज़ के लिए आना चाहते हैं, तो आएं।

*** पत्रकार ने आगे सवाल किया कि अगर कोई मुस्लिम मस्जिद (लिबिलिस) मस्जिद में जाता है, तो क्या आप मुसलमानों ही समझेंगे या मुर्तद और काफिर?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम किसी को उस समय तक मुर्तद नहीं कह सकते हैं कि जब तक वह ख़ुद को इस धर्म में संबंध विच्छेद नहीं करता है। आप इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि जब कि वह ख़ुद को मुस्लमान कहता है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो व्यक्ति कहता है, ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह भले ही जो केवल ला इलाहा इल्लल्लाह को स्वीकार ही कर ले कि अल्लाह तआला की ज़ात एकमात्र लाशरिक है तो हम उसे नहीं कह सकते कि तुम एक मुस्लिम नहीं। हम वास्तव में उदार नहीं हैं, बल्कि वास्तव में हम रूढ़िवादी हैं। हम उस वास्तविक शिक्षाओं पर चलने वाले हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई थीं और जिन पर उन्होंने अनुकरण किया। आज, जो ख़ुद को रूढ़िवादी कहते हैं वे वास्तव में रूढ़िवादी नहीं हैं, बल्कि इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं के से मुंह मोड़ने वाले हैं।

***एक जर्नलिस्ट ने अपना परिचय करवाया कि वह इटली से आई है और इटली में इस्लाम को जो आतंकवाद के साथ ज़िम्मेदार ठहराया है उस पर बड़ी चर्चा हो रही है, पिछले दिनों जो आतंकवाद की घटनाएं भी हुई हैं, तो आपके निकट जिहाद की क्या कल्पना है और आप इस इस्लाम के नाम पर इस उग्रवाद को कैसे देखते हैं? और मेरा एक और सवाल भी है।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं पहले आप के इस सवाल का उत्तर दूंगा। पहली बात तो यह है कि क्या यह जिहाद है? देखें इटली और बार्सिलोना में मारे जाने वालों में मुसलमान भी शामिल थे। उनमें से कुछ पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और अमेरिका से सम्बंध रखने वाले थे। बहरहाल वफात पाने वालों में से कुछ मुसलमान भी थे और यह जिहाद नहीं है। जिहाद का केवल उस रूप में आज्ञा है जैसा कि मैंने पहले कहा है कि यदि तुम पर ग़ैर-मुसलमानों की तरफ से हमला किया जा रहा है इस्लामी जिहाद तब ही होगा जब इस्लाम पर हमला किया जाए और आज कोई ऐसी सरकार नहीं है जो इस्लाम को समाप्त करने या इस्लाम के विरुद्ध लड़ाई की तैयारी करने की कोशिश कर रही है, इस तरह का जिहाद जिहाद नहीं है। यह निराशा लोगों द्वारा अपने घृणित उद्देश्यों को प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य है और उन्हें ऐसे तथाकथित उलमा कट्टरटा सिखाते हैं जो कुरआन मजीद के वास्तविक अर्थ नहीं जानते। हम हमेशा ऐसे बुरे व्यवहारों की निंदा करते हैं।

*** पत्रकार ने अपने दूसरा प्रश्न करते हुए पूछा कि आप तो इस प्रकार नहीं करते परन्तु जब इटली और जर्मनी में मुसलमान भी ऐसी घटनाओं की निंदा नहीं करते हैं तो आप उन्हें क्या कहेंगे?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कि वे ऐसी घटनाओं के ख़िलाफ खुल कर व्यक्त नहीं करते हैं, लेकिन हम इन घटनाओं की निंदा करते हैं और प्रकट भी करते हैं। मैं केवल अपने समुदाय के लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार हूं। मैं दूसरों को मजबूर नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि ऐसा किया जाना चाहिए जब किसी भी बुरे कृत्य के ख़िलाफ अभिव्यक्ति करने का अवसर हो। आपस में मिलना नहीं हो सकता जब तक हम ऐसे उपायों में शामिल न हों। यही सद्भाव और सच्चा एकीकरण है और ये दोनों हम से मांग करती हैं कि हम ऐसे कार्यों में शामिल हों।

***मैसी डोनिया से आने वाली एक पत्रकार ने पूछा कि ऐसे अवसरों की कितनी अहमयित है जिनमें लोग प्यार मुहब्बत और अपने धर्म के विषय में बता सकें जबकि युद्ध दुनिया पर मंडरा रहा है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया संस्थापक जमाअत अहमदिया अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि मैं अल्लाह तआला की तरफ से दो प्रमुख उद्देश्यों के साथ भेजा गया हूँ और यह इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार है कि एक तो लोगों को अपने निर्माता के अधिकार अदा करने की तरफ ध्यान केंद्रित कराऊं और दूसरा यह कि अपने साथियों के अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान केंद्रित करने के लिए कहूं। अत: अगर दूसरों के अधिकार अदा करने की कोशिश की जाए और शांतिपूर्ण तरीके से इस दुनिया में रहने की कोशिश की जाए तो यही प्यार, मुहब्बत और प्रेम है इस के बिना आप ऐसा नहीं कर सकते।

*** पत्रकार ने पूछा कि क्या आपका समुदाय इस पश्चिमी समाज में बढ़ रहा है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जहां तक हमारा संबन्ध है तो हम कम नहीं हो रहे हम बढ़ रहे हैं। अफ्रीका, एशिया, यूरोप, अरब दुनिया, अमेरिका में, कुछ चाहे तीन चार लोग हमारे साथ जर्मनी में शामिल हो रहे हैं और कुछ लोग फ्रांस, नीदरलैंड, बेल्जियम और ब्रिटेन में भी शामिल रहे हैं। कम से कम हम बढ़ रहे हैं और यह हमारी उपस्थिति के आधार पर भी अनुमान लगाया जा सकता है। पांच साल पहले, उपस्थिति केवल पंद्रह हज़ार थी और आज यहां नमाज़ के समय लगभग 23 हज़ार थी और आज आख़री दिन में वृद्धि होगी। यद्यपि मेहमान यहां शामिल होने के लिए आए हैं, अधिकांश 99.99 प्रतिशत आबादी यहां अहमदी ही मौजूद है। इसलिए हम बढ़ रहे हैं और यही हमारा मिशन है कि हम इस्लाम का असल पैग़ाम फैलाना है और हम यह फैला रहे हैं और संस्थापक जमाअत अहमदिया ने कहा है कि अल्लाह तआला ने मुझे इस उद्देश्य के लिए भेजा है कि सारी दुनिया में इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को फैलाओं और यही हमारा कर्तव्य है और हम इसे कर रहे हैं और उसी मिशनरी नेटवर्क के परिणाम में हम फैल रहे हैं और हम इस परिणाम में लोगों को कोई आकर्षक ऑफर या लाभ नहीं देते कि आप हमारे साथ शामिल हो तो हम आपको यह देंगे। केवल एक फायदा हम उन्हें बताते हैं कि आप अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के करीब हो जाओगे और दूसरी बात अपने साथी लोगों को अधिकार दें और यह मेरे आज के ख़ुत्बा का सार था।

***मैसी डोनिया से आने वाली एक दूसरी पत्रकार ने पूछा कि माननीय हुज़ूर क्या आप दूसरे धर्मों और विशेष रूप से ईसाई धर्म के साथ संबंधों के विषय में कुछ बताएंगे, क्या आप दो विभिन्न धर्मों से संबंध रखने वालों के**

बीच शादी की अनुमति देते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जहाँ तक हमारा संबंध है, हमें विश्वास है कि सभी धर्म अल्लाह तआला की तरफ से हैं। मूल शिक्षा हर धर्म के सच्चाई पर आधारित थी और अल्लाह तआला की तरफ से थी और वह एक थी। चाहे वह ईसाई धर्म है, यहूदी है हम यह भी मानते हैं कि प्रत्येक देश और क़ौम के निकट नबी आए हैं, अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि मुसलमान को इन सभी नबियों पर ईमान लाना चाहिए। हम हमेशा धर्मों के मध्य बात करते हैं। यहाँ तक कि संस्थापक जमाअत अहमदिया ने अपनी एक इच्छा जताई कि कादियान की छोटी बस्ती में एक हॉल निर्माण करूं जहां विभिन्न धर्मों से संबंधित सभी नेताओं को बलाओं ताकि वे अपने धर्मों के विषय में बात कर सकें। इसलिए हम खुले तौर पर इस बारे में दिमाग़ रखते हैं। हर साल हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मध्यवर्ती सेमिनार आयोजित करते हैं।

*** पत्रकार ने सवाल किया कि हज़रत मसीह के नासरी के बारे में आपकी क्या राय है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हम विश्वास रखते हैं कि हज़रत मसीह नासरी अल्लाह तआला के नबी थे और वे अल्लाह तआला के सच्चे नबी थे। यहाँ तक कि संस्थापक जमाअत अहमदिया अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नक्शे कदम पर आया हूँ जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा के बाद आए थे ताकि सभी यहूदियों को एक हाथ पर एकत्रित कर सकें और वे बहुत शांतिपूर्ण और हमदर्द इंसान थे इसी तरह संस्थापक जमाअत अहमदिया ने कहा कि मैं वही हूं और मैं मसीह हूं। जब मैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का प्रतिरूप होकर आया हूं तो मैं उन का कैसे अपमान कर सकता हूं? यह जमाअत अहमदिया के संस्थापक का दावा है। इसलिए यह हमारे ईसाई धर्म के बारे में मान्यता है जहां तक पोप की स्थिति का सवाल है तो मेरे निकट इस्लामी, शब्दों में पोप ईसा अलैहिस्सलाम या मसीह नासरी के ख़लीफा हैं। देखें यह भी मसीह के नायब का अनुक्रम है कैथोलिक यही ईमान रखते हैं इन के निकट यह होने को हम ख़िलाफत कहते हैं।

*** ZAF के पत्रकार ने सवाल किया कि मैंने पढ़ा है कि अहमदी जिस देश में रहते हैं इस से प्यार करते हैं, इस देश के कानून और मूल्यों की रक्षा करते हैं, आज मुझे पता चला है कि पुरूष स्त्री से हाथ नहीं मला सकते, क्या यह विरोधाभास नहीं है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह एक बहुत ही सामान्य सवाल है जिसे कई अवसरों पर कहा जाता है। क्या यह एकमात्र चीज़ है जो हम सब को समाज में एकीकृत कर सकती है? एक बार जब स्वीडन में एक पत्रकार ने मुझ से यह सवाल पूछा, मैंने उससे कहा कि हालांकि मैंने अपनी धार्मिक शिक्षा पर अपना हाथ नहीं लिया, लेकिन जब भी कोई समय आया कि आपको मेरी मदद की ज़रूरत है और आप किसी कठीनाई में हुईं तो आप मुझे सहायकों में सब से प्रथम स्थान पर पाएंगी। अत: यह एकीकरण है। एकता का मतलब है अपने देश से प्यार करना, हमें अपनी क्षमताओं का उपयोग करके अपने देश को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। हमें देश के कानून का सम्मान करना चाहिए। हमें देश के प्रत्येक नागरिक का सम्मान करना चाहिए। हमें इस देश में सभी का सम्मान करना चाहिए, यह वास्तविक एकीकरण है। यहूदियत में, तौरात की शिक्षाओं के अनुसार, यहूदी औरत से हाथ नहीं मिलाते। अभी हाल ही में, संयुक्त राज्य अमेरिका के एक मित्र ने मुझे बताया कि उनके घर में निकट ही यहूदियों की एक आराधना स्थल था और वहां के भिक्षु ने घोषणा की कि वे महिलाओं को हाथ नहीं मिलाएगा, इसलिए किसी ने कोई सवाल नहीं उठाया, क्योंकि यदि आप यदि वहां, ऐसा करेंगे तो यह कानून का उल्लंघन होगा। यदि यह समस्या मुसलमानों के मामले में आती है तो आप बहुत बहादुरी से सवाल करते हैं, लेकिन हम इसकी भी सराहना करते हैं और जवाब देने के लिए तैयार हैं।

***एक जर्नलिस्ट ने हुज़ूर को अस्सलामो अलैकुम कहा और पूछा कि आप एक समय दुनिया तीसरी युद्ध के संदर्भ में चेतावनी रहे हैं, आप बताएं कि मुस्लिम देशों इस युद्ध कितने जिम्मेदार हो सकते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, मुसलमान देश तो ज़िम्मेदार हैं क्योंकि वे कारण बन रहे हैं, और दूसरे शब्दों में, युद्ध वहां शुरू

पृष्ठ 1 का शेष

इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट हैं जो इन दिनों लाहौर में हैं जिन्होंने मेरे विरोध में अपनी पुस्तक ''असा-ए-मूसा'' प्रकाशित की ओर मेरे बारे में जो चाहा लिखा। हां मैं इतना कहता हूं कि इस भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए इश्र दोनों और के साक्षियों से क़सम लेकर पूछना चाहिए न मात्र साधारण तौर पर कहने से क्योंकि मलावामल तथा शरमपतवे धार्मिक पक्षपात रखने वाले आर्य हैं जिन्होंने मेरे विरोध में विज्ञापन दिए और मुन्शी इलाही बख़्श साहिब हैं जिन्होंने मेरे विरोध में "असा-ए-मूसा" पुस्तक लिख कर बहुत से लोगों को धोखा दिया है। अत: शपथ के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था। यह भविष्यवाणी बहुत से दूसरे लोगों को भी मालूम है और यह भी मालूम है कि मुन्शी साहिब की सेवा में पत्र भेजा गया थां, उनका उपरोक्त उत्तर आया था। इसलिए किसी प्रकार संभव नहीं कि हर दो आर्य इस भविष्यवाणी से इन्कार कर दें या मुन्शी इलाही बख़्श साहिब पत्र भेजने से इन्कार करें और यदि इन्कार भी करें तो इस बात का तो अब भी निर्णय हो सकता है कि सरवर खान का अरबाब लश्कर ख़ान से कोई संबंध है या नहीं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 260 रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 223-226)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

हो गया है।" (चूंकि यह प्रश्न उर्दू में था तो इस का उत्तर उर्दू में देने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने इस का अंग्रेज़ी में भी जवाब दिया था)

यह संवाददाता सम्मेलन चार घंटे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे। पिछसे पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कार्यालय के कामों को जारी रखा। कार्यक्रम के अनुसार, 9:00 बजे, मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पधारे।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

हज़रत मौलना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफतुल् मसीह अव्वल (रज़ि) के जीवन की कुछ ईमान वर्धक घटनाएं

हज़रत मौलना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफतुल् मसीह अव्वल(र) हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के पहले ख़लीफ़ा थे। आप भैरह वर्तमान पाकिस्तान के रहने वाले थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के बाद आप क़ादियान में हिजरत कर के आ गए। क़ादियान में ही आप की क़बर है। आप के तक़्वा का स्तर अत्याधिक ऊंचा था और विषेशत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पैरवी तथा अनुकरण अतुलनीय थी। आप के जीवन वृत्तान्त "हयाते नूर" के नाम से प्रकाशित है। इस पुस्तक से आप की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आज्ञापालन की कुछ प्रमुख घटनायें वर्णन की जाती हैं ताकि किसी श्रद्धावान के ईमान के सृदृढ़ होने का कारण बन जाएं।

हज़रत मौलना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफतुल् मसीह अव्वल की फ़िदाइयत की कुछ घटनायें

1. हज़रत मौलवी शेर अली साहिब(र) से वर्णन है कि एक बार रावलपिण्डी से एक ग़ैर अहमदी साहिब आए जो अच्छे मालदार आदमी थे और उन्होंने हज़रत अक़दस (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) से निवेदन किया कि मेरा अमुक रिश्तेदार बीमार है। हुज़ूर हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को आज्ञा दे दें कि वह मेरे साथ रावलपिण्डी जाएं और उसका इलाज करें। हज़रत साहिब ने कहा कि हमें विश्वास है कि अगर हम मौलवी साहिब को यह भी कहें कि आग में घुस जाओ या पानी में कूद जाओ तो उनको कोई आपत्ति न होगी। लेकिन हमें भी तो मौलवी साहिब के आराम का ख़याल रखना चाहिए। उनके घर में आजकल बच्चा होने वाला है। इस लिए मैं उनको रावलपिण्डी जाने के लिए नहीं कह सकता। मौलवी शेर अली साहिब(र) वर्णन करते हैं कि मुझे याद है कि इसके बाद हज़रत मौलवी साहिब का यह वाक्य वर्णन करते थे और इस बात पर ख़ुश होते थे कि हज़रत साहिब ने मुझ पर इतना बड़ा भरोसा किया है ।

2. मास्टर अल्लादत्ता साहिब स्यालकोटी का वर्णन है कि :-

"सन् 1900 ई. या सन् 1901 ई. की घटना है कि मैं दारुल अमान में मौजूद था। उन दिनों एक नवाब साहिब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल(र) की सेवा में इलाज के लिए आये हुए थे। जिनके लिए एक अलग मकान था। एक दिन नवाब साहिब के नौकर हज़रत मौलवी साहिब के पास आए जिन में एक मुसलमान और एक सिक्ख था और निवेदन किया कि नवाब साहिब के इलाक़ा में लाट साहिब आने वाले हैं। आप उन लोगों के संबन्धों को जानते हैं। इसलिए नवाब साहिब की इच्छा है कि आप उनके साथ वहाँ चले। हज़रत मौलवी साहिब ने कहा कि मैं अपनी जान का मालिक नहीं। मेरा एक स्वामी है। अगर वह मुझे भेज दे तो मुझे क्या इन्कार है। फिर ज़ुहर की नमाज़ के समय वे नौकर मस्जिद में बैठ गया। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए तो उन्होंने अपने आने का कारण वर्णन किया। हुज़ूर ने फ़र्माया। इसमें संदेह नहीं कि अगर हम मौलवी साहिब को आग में कूदने या पानी में छलांग लगाने के लिए कहें तो वह इन्कार न करेंगे लेकिन मौलवी साहिब के वजूद से हज़ारों लोगों को हर समय लाभ पहुँचता है। क़ुर्आन और हदीस का दर्स देते हैं। इसके अलावा सैकड़ों बीमारों का प्रतिदिन इलाज करते हैं। एक दुनियादारी के काम के लिए हम इतना लाभ बन्द नहीं कर सकते ।

उस दिन जब अस्र की नमाज़ के बाद क़ुर्आन मजीद का दर्स देने लगे तो ख़ुशी के कारण मुँह से शब्द न निकलते थे। फ़र्माया, मुझे आज इतनी ख़ुशी है कि बोलना कठिन है और वह यह कि मैं हर समय इस कोशिश में लगा रहता हूँ कि मेरा आक़ा मुझ से प्रसन्न हो जाए। आज मेरे लिए कितनी ख़ुशी का स्थान है कि मेरे स्वामी ने मेरे बारे में इस तरह का ख़्याल व्यक्त किया है कि "अगर हम नूरुद्दीन को आग में जलायें या पानी में डुबों दें तो फिर भी वह इन्कार नहीं करेगा ।"

3. हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने जमाअत के शादी के योग्य लड़कों और लड़कियों की एक सूची तैयार की थी और उसे आप बहुत सुरक्षित रखा करते थे और साधारणत: जो कोई अहमदी अपनी लड़की या लड़के के लिए रिश्ता मालूम करना चाहता। हुज़ूर उसके मुनासिब हाल उसे रिश्ता बता दिया करते थे और हर व्यक्ति हुज़ूर के द्वारा निर्णित रिशते को ख़ुशी-ख़ुशी मन्ज़ूर कर लेता था। मगर एक बार जब एक व्यक्ति को अपनी लड़की का रिश्ता किसी अहमदी से करने का आदेश दिया तो उसने स्वीकार न किया। इस पर हुज़ूर को बहुत कष्ट हुआ और हुज़ूर ने भविष्य के लिए रिश्ता-नाता की इस व्यवस्था को ख़त्म कर दिया।

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब(र) का वर्णन है कि :-

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माने के जितने आदमी हैं सबको हुज़ूर अलैहिस्सलाम से अपने-अपने रंग में मुहब्बत थी। मगर जितनी अदब और मुहब्बत हुज़ूर से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल(र) को थी। उसकी मिसाल पाना मुश्किल है। वहाँ बात चली कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी दोस्त को अपनी लड़की का रिश्ता किसी अहमदी से कर देने के लिए फ़र्माया। मगर वह दोस्त राज़ी न हुआ। संयोग से उस समय स्व. अमतुल हयी साहिबा भी जो उस समय बहुत छोटी थीं, खेलती हुई सामने आ गयीं। हज़रत मौलवी साहिब उस दोस्त के बारे में सुनकर ख़ुशी से कहने लगे कि "मुझे तो अगर मिर्ज़ा कहे कि अपनी लड़की निहाली (निहाली एक ज़मीदारनी थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर में लगी हुई थी।) के लड़के को दे दो। तो मैं बिना किसी सोच-विचार के तुरन्त दे दूँगा ।" यह बात अत्यन्त प्यार और मुहब्बत की थी। मगर अन्जाम देखो कि अन्तत: वही लड़की हुज़ूर अलैहिस्सलाम की बहू बनी और उस आदमी की पत्नी बनी जो स्वयं हज़रत मसीह मौऊद का हुस्न व एहसान में मिसाल है।"

आदरणीय जनाब हकीम मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब आफ़ मियानी फ़र्माते हैं कि, एक बार जब आप दवाख़ाना में बैठे थे। चारों तरफ़ लोग बैठे थे। एक व्यक्ति ने आकर कहा, कि मौलवी साहिब ! हुज़ूर याद करते हैं। यह सुनते ही इस तरह घबराहट के साथ उठे कि पगड़ी बाँधते जाते थे और जूता घसीटते जाते थे। मानो दिल में यह था कि हुज़ूर के आदेश की अनुकरण में देरी न हो। फिर जब ख़लीफ़ा हो गये तो अक्सर फ़र्माया करते थे कि तुम जानते हो कि नूरुद्दीन का यहाँ एक माशूक होता था जिसे मिर्ज़ा कहते थे। नूरुद्दीन उसके पीछे यूँ दीवाना वार फिरा करता था कि उसे जूते और पगड़ी का भी होश नहीं हुआ करता था ।

5. हज़रत साहिबज़ादा बशीर अहमद साहिब(र) फ़र्माते हैं कि :-

"जिन दिनों हमारा छोटा भाई मुबारक अहमद बीमार था। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब (ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल(र)) को उसके देखने के लिए घर में बुलाया। उस समय आप अहाते में एक चारपाई पर बैठे थे और अहाते में कोई फ़र्श इत्यादि नहीं था। मौलवी साहिब आते ही आप की चारपाई के पास ज़मीन पर बैठ गए हज़रत ने फ़र्माया" मौलवी साहिब चारपाई पर बैठें। " मौलवी साहिब ने कहा," हुज़ूर ! मैं बैठा हूँ "और ऊँचे होकर बैठ गए और हाथ चारपाई पर रख लिया मगर हज़रत साहिब ने जब दोबारा कहा तो मौलवी साहिब उठ कर चारपाई के एक किनारे पर पावों की ओर ऊपर बैठ गये ।"

इस रिवायत के नीचे हज़रत साहिबज़ादा साहिब(र) का नोट उन्हीं शब्दों में निम्नलिखित है कि "मौलवी साहिब में आज्ञापालन और शिष्टाचार की भावना अत्यन्त व्यापक तौर पर थी ।"

अल्लाह ! अल्लाह ! आक़ा की आज्ञापालन में कैसा कमाल है कि वह व्यक्ति जो किसी बड़े से बड़े आदमी के सामने ज़मीन पर बैठने के लिए विद्यार्थी जीवन में भी तैयार नहीं होता था। धार्मिक और सांसारिक उन्नतियों की बड़ी-बड़ी मंज़िलें तय करने के बाद भी हज़रत मसीह मौऊद के सामने ज़मीन पर बैठने में ही अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझता है ।

6. हज़रत मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी का वर्णन है कि :-

"एक बार एक हिन्दू बटाला से आपके पास आया और कहा कि मेरी पत्नी बहुत बीमारी है कृपा करके बटाला चल कर उसे देख लें। आपने कहा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब से इजाज़त हासिल करो। उसने हज़रत साहिब से विनती की। हुज़ूर ने आज्ञा दे दी। अस्र की नमाज़ के बाद जब हज़रत मौलवी साहिब हज़रत अक़दस की सेवा में मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने फ़र्माया कि उम्मीद है आप

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 2 Thursday 7 December 2017 Issue No. 49

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

आज ही वापिस आ जायेंगे। आपने कहा,बहुत अच्छा। बटाला पहुँचे और रोगिणी को देखा। वापिसी का इरादा किया मगर वर्षा इतनी हुई कि जल-थल हो गया। उन लोगों ने कहा कि हज़रत ! रास्ते में चारों और डाकुओं का भी ख़तरा है। फिर वर्षा इतनी ज़ोर से हुई है गुज़रना कठिन होगा। मगर आपने कहा चाहे कुछ भी हो,सवारी का प्रबन्ध भी हो या न हो,मैं पैदल चल कर भी क़ादियान अवश्य पहुँचूँगा क्योंकि मेरे आका का आदेश यही है कि आज ही मुझे वापिस क़ादियान पहुँचना है। ख़ैर तांगे का प्रबन्ध हो गया और आप चल पड़े मगर वर्षा के कारण रास्ते में कई जगहों पर इतना पानी इकट्ठा हो चुका था कि आपको पैदल वह पानी पार करना पड़ा। कांटों से आपके पाँव ज़ख़्मी हो गये मगर क़ादियान पहुँच गये और फ़ज्र की नमाज़ के समय मस्जिद मुबारक में हाज़िर हो गये। हज़रत अक़दस ने लोगों से पूछा कि क्या मौलवी साहिब रात को बटाला से वापस लौट आये थे। इससे पहले कि कोई दूसरा उत्तर देता आप तुरन्त आगे बढ़े और कहा कि हुज़ूर ! मैं वापस आ गया था। यह बिल्कुल नहीं कहा कि हुज़ूर ! रात बड़ी ज़ोर की बारिश थी। अधिकतर जगह पैदल चलने के कारण मेरे पाँव ज़ख़्मी हो चुके हैं और मैं बहुत तकलीफ़ उठाकर वापिस पहुँचा हूँ। इत्यादि इत्यादि, बल्कि अपनी तकलीफ़ का वर्णन तक भी नहीं किया ।"

अत: आपकी ज़िन्दगी फ़िदायइयत की घटनाओं से भरी पड़ी है। यह कुछ एक घटनायें तो नमूने के तौर पर लिखी गयी हैं। वरना वास्तविकता यह है कि आपकी ज़िन्दगी का एक-एक क्षण इस सिलसिला के लिए समर्पित था। आप आमतौर पर सारा दिन एक ऊन के गलीचे के ऊपर बैठे रहते थे। आगे एक मेज़ होता था। उस पर बैठकर चिकित्सा करते थे। उसी पर बैठे-बैठे कुर्आन और हदीस और वैद्य की पुस्तकें पढ़ाते थे और कभी-कभी खाना भी वहीं मंगवा लेते थे ।

मुहतरम शेख अब्दुल लतीफ़ साहिब बटालवी कहते हैं कि मैं जब क़ादियान जाता था तो अक्सर सारा-सारा दिन आप ही के पास बैठा रहता था।अस्र की नमाज़ के बाद आप मस्जिद अक्सा में क़ुर्आन करीम का दर्स दिया करते थे। एक दिन दर्स से वापस आते हुए हिन्दू डिप्टी साहिब के मकान के पास मुझे बाज़ू से पकड़कर फ़र्माया कि अब्दुल लतीफ़ ! तुम वह समय देखोगे कि जब तुम ख़लीफ़ा को देखने के लिए तर्सा करोगे। शेख़ साहिब फ़र्माते हैं कि उस समय तो मैं आपकी बात का मतलब न समझा लेकिन अब जबकि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्सरेहिल अज़ीज़ को देखने के लिए तरसने लगे तो बात समझ में आयी।

☆☆☆

चांद सूरज का ग्रहण इमाम महदी का

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार मसीह मौऊद के आने की निशानियों में से एक बड़ी श्रेष्ठ निशानी सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण थी। जो अल्लाह की कृपा से पूर्व और पश्चिम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में पूरी हुई और इसलिये ग्रहण की निशानी का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत से एक विशेष संबंध है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर आप ने फ़र्माया:-

"हमारे लिए सूर्य और चाँद ग्रहण का निशान प्रकट हुआ और सैकड़ों आदमी इस को देखकर हमारी जमाअत में शामिल हुए और इस सूर्य और चाँद ग्रहण से हम को ख़ुशी पुहुंची और विरोधियों को अपमान। क्या वे क़सम लेकर कह सकते हैं कि उन का दिल चाहता था कि ऐसे अवसर पर जब हम मसीह मौऊद होने का दावा कर रहे हैं सूर्य एवं चाँद ग्रहण हो जाए और अरब देश में इसका नामोनिशान तक न हो और फिर जबकि इच्छा के विरुद्ध प्रकट हो गया तो निस्सन्देह उनके दिल दुखे होंगे और उस में अपना अपमान देखते होंगे"

(अन्वारुल इस्लाम,रूहानी ख़ज़ाइन भाग-9, पृष्ठ-33)

असदुल्लाह कुरैशी साहिब हज़रत क़ाज़ी अकबर साहिब[रज़ि.] के बारे में लिखते हैं कि "हज़रत क़ाज़ी साहिब[रज़ि.] अहमदियत स्वीकार करने से पहले अहले हदीस थे। हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमी से संबंध थे। अपने क्षेत्र के इमाम थे। क्षेत्र के लोगों की धार्मिक शिक्षा दीक्षा में व्यस्त रहते थे सूर्य चन्द्र ग्रहण का निशान आसमान पर प्रकट हुआ। आप इस बात से पहले ही अवगत थे कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रकटन का ज़माना निकट है सूर्य चन्द्र ग्रहण के भव्य निशान के प्रकट होने पर आपके छात्रों और अपने साथियों में इसकी चर्चा होने लगी। बशीर अहमद साहिब जो उनके पोते हैं वह कहते हैं कि मैंने यह वर्णन मियां मंगा साहबि से सुना है कि हम क़ाज़ी साहिब से पढ़ते थे कि सूर्य और चंद्रमा के ग्रहण का निशान रमज़ान में प्रकट हुआ तो क़ाज़ी साहिब ने फ़र्माया कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम के आने का निशान तो प्रकट हो गया है हमें उनकी खोज करनी चाहिए। इन दिनों में चारकोट के लोग सौदा सामान खरीदने के लिए जेहलम जाया करते थे। काज़ी साहब ने जेहलम आने वाले लोगों को यह कार्य सौंपा था कि हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो से मुलाक़ात करें। उनसे पूछ कर आएं कि सूर्य चन्द्र ग्रहण का यह निशान तो प्रकट हो गया। आप इमाम महदी अलैहिस्सलाम के बारे में हमारा मार्गदर्शन करें। अत: वे लोग हज़रत मौलवी साहिब से मिले। हज़रत मौलवी साहब ने कुछ पुस्तकें और एक पत्र हज़रत क़ाज़ी साहिब की ओर भेजा। पत्र और पुस्तकें प्राप्त करने से पहले आप ने स्वप्न में देखा। कि किसी ने आप को तीन पुस्तकें पढ़ने के लिए दी हैं। उनमें से पहली पुस्तक पढ़ने के लिए आपने खोली तो उसके भीतर गंद भरा हुआ था और दुर्गंध आ रही थी। इस पर आपने वह पुस्तक फेंक दी। फिर दो पुस्तकों को देखा कि उन से नूर की किरणें निकल रही हैं। हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहब [रज़ि.] की भिजवाई हुई पुस्तकों की प्राप्ति पर आपका स्वप्न इस तरह पूरा हो गया कि हज़रत मौलवी साहब ने जो पुस्तकें आप को भिजवाईं उनमें से एक पुस्तक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों के खण्डन के बारे में थी। आप ने पहले उसको पढ़ना शुरू किया। जब उसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संबंध में दिल दुखाने वाले शब्द देखे तो उसे पढ़ना छोड़ दिया और परे फेंक दिया और दूसरी दो पुस्तकें और पत्र पढ़े तो उन्हें अपने स्वप्न के बिलकुल अनुसार पाया और आप को जांच पड़ताल करने के बारे में अधिक विचार पैदा हुआ। अत: आपने जांच पड़ताल के लिए तीन लोगों पर आधारित एक दल क़ादियान भिजवाया और उन तीनों ने क़ादियान पहुंचकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। और यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार रिवायतों में आता है हर जगह प्रत्येक के साथ ही होता है जब यह दल बटाला पहुंचा तो मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी ने उन्हें भी रोक दिया। उनकी कुछ सेवा भी की और कहा आप लोग व्यर्थ में कई दिनों की पैदल यात्रा का कष्ट सहन करके क़ादियान जाते हैं। क्योंकि आप दूरस्थ क्षेत्र के रहने वाले हैं इसलिए आपको पता नहीं। मिर्ज़ा साहिब का सारा कारोबार झूठा है। इसलिए आप लोग वापस चले जाएं अत: मौलवी साहिब ने उन्हें न केवल यह कहा बल्कि वापस शहर के किनारे तक, बाहर तक छोड़ कर गए। परन्तु उनसे विदा होने के बाद ये तीनों फिर वापस जाने के बजाय क़ादियान पहुंच गए और वहां आकर अल्लाह तआला की कृपा से बैअत कर ली। इसके बाद क़ाज़ी साहिब ने पहले लिखित बैअत की और फिर क़ादियान पहुंच कर हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(तारीख़-ए-अहमदिया, जम्मू कश्मीर, संकलनकर्ता असदुल्लाह कुरैशी साहिब, पृष्ठ 57-59 से उद्धृत)

☆☆☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad